Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 07 30 जुलाई, 2021 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

अन्नदाता बेचारा सरकार और किस्मत का मारा

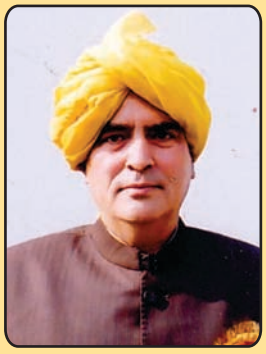

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आजादी के 70 वर्ष बाद भी किसानों की बदहाली बढ़ती जा रही है। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। किसानों के हितों की रक्षा के दावे हमेशा होते रहे हैं। सरकार बदलती हैं, किसानों की दशा सुधारने के दावे होते हैं, लेकिन ये बेअसर रहते हैं। किसान 9 माह से सड़कों पर बैठा है और एक दर्जन से अधिक वार्तालाप बेनतीजा रही है। अब किसान दीनबंधु सर छोटू राम को पुकार रहा है लेकिन कोई दिखाई नहीं दे रहा किसान मसीहा।

तीन कृषि कानूनों के खिलाफ अपने हकों के लिये संघर्ष करते हुये लगभग 600 निर्दोष किसान अपनी जान गवा चुके हैं। लेकिन कोई समस्या का हल नहीं निकला और षडयंत्र के तहत आंदोलन को विफल बनाया जा रहा है। कृषि कानूनों के खिलाफ धरने पर बैठे प्रदर्शनकारियों की एक प्रमुख मांग यही है कि एमएसपी की कानूनी गारंटी दी जाए कि कोई भी खरीददार एमएसपी से कम कीमत पर कृषि उपज को नहीं खरीदेगा।

ये तीनों कानून अमेरीका व यूरोप में छह–सात दशकों से चल रहे कानूनों की तर्ज पर ही है जिनके कारण खेती गहरे संकट में आ चुकी है और सरकार इतने विकसित देशों में विफल हो चुके माडल को भारत में किसानों पर थोपना चाहती है, जहां पर 80 प्रतिशत किसान 2 एकड़ से कम जोतों के सहारे पिस रहे हैं। 87 प्रतिशत सबसिडी के बावजूद भी अमेरीका में किसानों पर 420 अरब डालर का कर्ज है और भारी सबसिडी के बावजूद अधिकतर किसान खेती छोड़ना चाहते हैं। चीन में भी किसानों को भारत से चार गुणा अधिक सबसिडी दी जाती है। किसानों की स्थिति सुधारने के लिए एक और कानून पास किया जाये कि देश में कहीं भी किसान की फसल एमएसपी से कम कीमत पर नहीं खरीदी जायेगी।

एमएसपी का लाभ भी किसानों को नहीं मिल रहा है। वैसे भी एमएसपी बहुत कम फसलों पर दी जाती है। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा दालें (दलहन) और तिलहन का उत्पादन करने वाले किसानों को उठाना पड़ रहा है। आलम ये है कि पिछले खरीफ सीजन, यानी कि 2020–21 में जितनी दालें एवं तिलहन खरीदने का लक्ष्य रखा था, उसकी तुलना में छह फीसदी से भी कम खरीदी हुई है। सरकारी रेट पर दाल एवं तिलहन बेचने के लिए रजिस्ट्रेशन कराए 8.93 लाख किसानों से खरीद नहीं हुई क्योंकि सरकार ने ऐसे कुल किसानों में से महज 16 फीसदी से ही उनकी उपज खरीदी है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने खरीफ 2020–21 सीजन में 51.91 लाख टन दालें (तुअर, मूंग, उड़द) एवं तिलहन (मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल) खरीदने का लक्ष्य रखा था. लेकिन इसमें से महज 3.08 लाख टन खरीद हो पाई है। इस दौरान अपनी उपज बेचने के लिए 10.60 लाख किसानों ने रजिस्ट्रेशन कराया था, लेकिन इसमें से 1.67 लाख किसानों से ही सरकार ने दलहन एवं तिलहन खरीदा। पहले लोकडाउन की बात की जाए तो 2020–21 की पहली तिमाही में जीडीपी 23.9 प्रतिशत और दूसरी तिमाही में 7.5 प्रतिशत गिरी।

नाबार्ड के चेयरमैन प्रोफेसर आर रामकुमार मानते हैं कि साल 2016 और 2020 के बीच वास्तव में खेती से जुड़ी आय में बढ़ोत्तरी के बजाए गिरावट आई हैं, वो इसके लिए कृषि के खिलाफ व्यापारिक शर्तों में बदलाव और सरकार की तर्कहीन नीतियों को जिम्मेदार मानते हैं। वर्तमान महामारी में अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की तरफ से किए गए एक सर्वे अनुसार बड़ी तादाद में किसान या तो अपनी फसल बेच ही नहीं पाए थे या उन्हें कम दाम में बेचने को मजबूर होना पड़ा। किसानों का कहना था कि वो दोहरी मार झेल रहे हैं क्योंकि महामारी की वजह से सप्लाई चेन टूटने से मजदूरी और लागत पर होने वाला खर्च बढ़ गया है।

आंकड़ों के अनुसार कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की वार्षिक विकास दर 2012–13, 2013–14, 2014–15, 2015–16, 2016–17, 2017–18 और 2018–19 में क्रमशः 1.5 प्रतिशत, 5.6 प्रतिशत, –0.2 प्रतिशत, 0.6 प्रतिशत, 6.3 प्रतिशत, 5.0 प्रतिशत और 2.9 प्रतिशत रही है। 7 जनवरी, 2020 को राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) की रिपोर्ट के अनुसार भी वर्ष 2019–20 में कृषि विकास दर का अनुमान 2.8 प्रतिशत ही है। अतः 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए कृषि क्षेत्र को कम से कम औसतन 10 फीसदी सालाना की वृद्धि होनी चाहिए थी. जबकि हकीकत में यह 5 फीसदी की औसत दर से भी नहीं बढ़ रही है। कृषि संकट का अंदाजा इस तथ्य के साथ लगा बताते हैं

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

कि वर्ष 2014 से लेकर वर्ष 2018 के बीच में कुल 57,345 किसानों ने आत्महत्या की है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना आदि विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाएं भी असफल रही हैं।

हाल ही में 5 जून 2021 को सरकार द्वारा आवश्यक वस्तु (संशोधन) आडिनैस 2020 पारित किया गया जिसके अनुसार सरकार ने दालें, खाद्य तेल व अन्य कृषि उत्पादकों के संग्रह, आपूर्ति पर नियंत्रण लगाया है जिसमें सरकार द्वारा अपने पहले से पास किये गये 2020 के नये कृषि कानूनों को स्वयं निरस्त कर दिया गया जोकि सवर्था किसान हितों के विपरीत है।

आक्सफैम की इन्क्युवैलिटी वायरस रिपोर्ट दर्शाती है कि महामारी के बावजूद भारत के 11 खरबपतियों की दौलत में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है जिससे 10 वर्ष तक मनरेगा की क्षतिपूर्ति की जा सकती है। भारत के खरबपतियों की संयुक्त दौलत में 44.5 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है जबकि 8 करोड़ लोग बेरोजगार हो गए हैं। 2013 की रिपोर्ट के अनुसार किसान की औसत आमदन मासिक 6424 रूपए है जबकि गैर कृषि व्यवसाय से यह आधी ही है। न्यूनतम समर्थन मूल्य इसी दशा में एक पग है तथा किसान संघर्षरत है।

फसल बीमा योजना स्कीम में वर्ष 2019–20 में अब तक मात्र 422 लाख किसानों ने कुल 3018 करोड़ का हिस्सा अदा किया। 328 लाख हैक्टेयर बीमित हुए तथा किसानों को 20,090 करोड़ का मुआवजा मिला अभी खरीफ के भुगतान बाकी है। किसान पर 12 लाख 60 हजार करोड़ का कर्ज है जिसका वे ब्याज तक नहीं चुका पा रहे हैं जबकि केन्द्रीय सरकार ने बढ़े–बड़े करोड़पतियों व व्यापारियों का लाखों करोड़ रुपये का कर्ज माफ कर दिया।

प्रधानमंत्री सिंचाई योजना की बात की जाए तो प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना एक बड़े बजट वाली योजना थी। इस योजना का शुभारंभ 1 जुलाई 2015 को हुआ और इसके अंतर्गत 5 वर्ष के लिए 50,000 करोड़ के बजट की बात की गई थी लेकिन, आज 5 वर्ष बीतने के बाद भी देश के किसान के खेत तक सिंचाई की उपलब्धता को सुनिश्चित नहीं किया जा सका है। यह योजना इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि आर्थिक सर्वेक्षण 2017–18 के अनुसार भारत में कुल 14.2 करोड़ हेक्टेयर जमीन पर कृषि होती है और इस कुल कृषि भूमि के 52 फीसदी हिस्से को अनियमित सिंचाई और बरसात पर निर्भर होना पड़ता है क्योंकि भूजल स्तर दूषित और बहुत नीचे जा चुका है। अतः देश में कृषि संकट के लिए सिंचाई की समस्या प्रमुख स्थान रखती है।

सरकार यदि वास्तव में वर्ष 2022 तक किसान की आय दुगनी करना चाहती है तो उसे दयनीय हालात से निकालकर एक कारगार कृषि सुधार योजना बनानी होगी। कृषि क्षेत्र में लंबे समय से बड़े सुधारों की आवश्यकता है। इसके लिए किसानों के कृषि उत्पाद की मार्किट व्यवस्था की कार्यक्षमता को बरकरार रखना आवश्यक है जिसके लिए भारतीय खाद्य निगम द्वारा पब्लिक वितरण सिस्टम के साथ–साथ कृषि उत्पाद मार्केट की स्थापना के लिए कमर्शियल खरीद करना जरूरी है और खाद्यान्नों की व्यवसायिक संचालन के लिए नया राष्ट्रीय कृषि फूड निर्यात उद्योग स्थापित किया जाना चाहिए। सरकार द्वारा कृषि कानूनों के विरूद्ध लगातार बढ़ रहे रोष स्वरूप किसानों के आंदोलन का शांतिपूर्ण व कानूनी दायरे में किसान संगठनों के साथ समाधान किया जाना चाहिए।

विवादित कृषि कानूनों में संशोधन कर न्यूनतम समर्थन मूल्य की गांरटी देनी होगी। कृषि के विकास हेतू स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को लागू करना अति आवश्यक है। किसान के खेत में कटाई के लिए तैयार/पकी हुई फसल के आग लगने, बाढ़ ओलावृष्टि आदि किसी भी प्राकृतिक कारण से हुई हानि पर सरकार द्वारा वास्तविक आंकड़ों के आधार पर तुरंत मुआवजा दिए जाने का प्रावधान होना चाहिए। जैविक, प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर एक टिकाऊ खेती के बारे में सोचना होगा और खेती के लिए उपयुक्त बीज, खाद, पेस्टिसाइड आदि तथा अन्य नवीन तकनीकियों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। इस प्रकार

किसानी फसल के साथ–साथ मुआवजे, पशुधन की हानि आदि की भरपाई के लिए स्थाई कृषि नीति बनाकर किसान आपदा कोष स्थापित किया जाए। किसानों के लिए भी बैकों से आसान कर्ज उपलब्ध करवाने की जरूरत है। जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर मौसम आधारित पूर्वानुमान जानकारियां, उपयोग करने लायक कृषि सलाह, जलवायु अनुकूलन बीज आदि किसानों तक पहुंचाने के बारे में पहल करनी होगी।

इसके अतिरिक्त शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे किसानों पर पुलिस द्वारा बर्बरता पूर्ण दमनकारी कार्यवाही करना व उन पर देशद्रोह कानून के तहत दमनात्मक कार्यवाही करना समस्त राष्ट्र के लिये घातक सिद्ध हो सकती है। अतः शासक दल द्वारा तुरन्त प्रभाव से विवेकशील व जागरूक तरिके से किसानों की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए और इस सन्दर्भ में हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा की गई टिप्पणी व आदेशों पर सकरात्मक विचार करके तर्कशील निर्णय द्वारा किसानी समस्याओं का समाधान किया जाना आवश्यक है।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

संसद में हंगामे से दुखी प्रधानमंत्री अतीत में भी झांके

– कमलेश भारतीय

संसद का मानसून सत्र शुरू हुआ और जैसी हमारी नयी परंपरा बन गयी है, हंगामे की भेंट चढ़ गये दोनों सदनों में ये पहले दिन के सत्र। इससे हमारे प्रधानमंत्री बहुत व्यथित हुए और कहा कि परंपरा के अनुसार नये मंत्रियों के परिचय भी नहीं करवाने दिये। यह परंपरा प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से चली आ रही है। विपक्षी सांसदों ने न केवल हंगामा किया बल्कि नारेबाजी भी की। इस पर क्षुब्ध प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कुछ लोगों को दलित, आदिवासी, अल्प पिछड़ा वर्ग और महिला मंत्रियों का यहां परिचय करवाया जाना रास नहीं आ रहा। दोनों सदनों में विपक्षी सांसद तीन नये कृषि कानूनों और बढ़ती महंगाई जैसे ज्वलंत मुद्दों पर नारेबाजी करते दिखे। हालांकि सदन की कार्यवाही स्थगित भी की गयी लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा ।

अब सवाल उठता है कि आखिर नकारात्मक मानसिकता बनी कैसे ? परंपरायें टूटती क्यों जा रही है ? कभी सोचिए।

जब गोवा में बिना कांग्रेस को राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का न्यौता देने से पहले ही आप दलबदल कर सरकार बना लेते हो, तब कौन सी परंपरा का पालन किया गया था ? जब आधी रात को दलबदल करवा कर महाराष्ट्र में राज्यपाल को जगा कर सरकार बना देते हो तब कौन सी परंपरा का पालन किया गया था ? जब मणिपुर में मात्र दो विधायकों के बल पर ही कांग्रेस विधायकों को तोड़कर सरकार बना ली थी, तब कौन सी परंपरा का पालन किया था आपने ? जब उत्तराखंड में विजय बहुगुणा को मुख्यमंत्री बनाया था और कोर्ट ने हरीश रावत को सरकार लौटाई थी तब कहां गयी थीं आपकी परंपरा की दुहाइयां ? कितनी कितनी बार कोर्ट ने आपको सही कदम के लिए आगाह किया ताकि आप लक्ष्मण रेखायें न लांघें । राजस्थान में मुख्यमंत्री द्वारा सत्र बुलाने की मांग राज्यपाल ठुकराते रहे और फाइल लौटाते रहे, वह कैसी परंपरा थी ? राष्ट्रपति को दखल देना चाहिए था ।

किसान आंदोलन में आपने बातचीत के द्वार ही बंद कर लिये ? यह लोकतांत्रिक परंपरा है क्या ? यदि देश का किसान आपके द्वार पर सात माह से बैठा अपनी बात कहना चाहता है तो आप समय निकाल कर सुनते क्यों नहीं ? क्यों एक फोन कॉल की दूरी पर बैठे हो ? आदिवासी, दलित और अल्प संख्यकों की चिंता है किसान की नहीं ? वे क्या इस देश में नहीं रहते ?

प्रधानमंत्री जी की व्यथा बहुत उचित है क्योंकि संसद पर एक दिन में लाखों रुपये खर्च हो जाते हैं ताकि सबसे बड़ी पंचायत में देशवासियों की समस्याओं पर बातचीत की जाये और कोई हल निकाला जाये। विपक्षी सांसदों को भी परंपराओं का पालन कर इस पैसे का सदुपयोग करने के लिए सहयोग करना चाहिए। प्रदर्शन व धरने के लिए सड़क बहुत है। संसद से सड़क तक देश मे प्रदर्शन ही प्रदर्शन हो रहे हैं।

कृपया परंपराओं का पालन कीजिए और देश को लोकतांत्रिक राह पर चलाने में पक्ष और विपक्ष सहयोग दें।

स्वदेशी रक्षा उपकरणों को बढ़ावा देने की जरूरत

– डा. एल. एस. यादव

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह भारत को सैन्य प्लेटफार्म तथा उपकरणों के विनिर्माण में निवेश के लिए एक आकर्षक स्थल के रूप में पहले ही पेश कर चुके हैं। गत माह भारत स्वीडन रक्षा उद्योग सहयोग विषय पर एक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सिंह ने स्वीडन की अग्रणी रक्षा उत्पादन कंपनियों को भारत देश में विनिर्माण के केन्द्र बनाने के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने कहा था कि भारत सरकार ने अनेक ऐसे सुधार किए हैं जो भारत की जरूरतों को पूरा करने के लिए ही नहीं बल्कि वैश्विक मांगों को भी पूरा करने में रक्षा उद्योग के लिए काफी मददगार साबित होंगे। रक्षा मंत्री ने यह भी जानकारी दी कि रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में सरकार ने स्वचालित रूप से 74 प्रतिशत तथा सरकार के रास्ते 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को मंजूरी प्रदान कर दी है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रौद्योगिकी केंद्रित एफडीआई नीति के चलते भारतीय उद्योग प्रामाणिक एवं उपयुक्त सैन्य प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में स्वीडन के उद्योगों के साथ सहयोग कर सकेंगे। विदेश के वास्तविक उपकरण निर्माता अपने बल पर ही संस्थान स्थापित कर सकते हैं और इस काम के लिए वे भारतीय कंपनियों के साथ साझेदारी भी कर सकते हैं। इस तरह स्वीडन की कंपनियां भारत की मेक इन इंडिया पहल का फायदा उठा सकती हैं। स्वीडन की कुछ कंपनियां भारत में पहले से मौजूद हैं और वे अच्छा कार्य कर रही हैं। उस आधार पर नई कंपनियां समझ सकती हैं कि भारत रक्षा निर्माण एवं निवेश के लिए एक प्रमुख स्थल है। इस तरह भारत के रक्षा उद्योग और स्वीडन की कंपनियों के बीच रक्षा उपकरण उत्पादन की विशेष संभावनाएं हैं। इसके सफल रहने पर स्वीडन को आपूर्ति भी कर सकता है।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए सरकार ने अगस्त 2020 में 101 रक्षा उपकरणों के आयात पर रोक लगा दी थी। अब भारत में ही इनके निर्माण किए जा रहे हैं। सरकार ने इन रक्षा उपकरणों के निर्माण के लिए 460 से ज्यादा लाइसेंस जारी कर दिए हैं। रक्षा मंत्रालय के अनुसार मौजूदा समय में आयुध कारखानों के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया है कि वे अपनी कुल आय का एक चौथाई हिस्सा राजस्व निर्यात से हासिल करें। यह सब संभव हुआ तो भारत जल्द ही रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन जाएगा। रक्षा आयात के लिए रक्षा उपकरणों की पहली नकारात्मक सूची जो अगस्त 2020 में लाई गई थी, उसमें खींचकर ले जाई जाने वाली आर्टिलरी गन, कम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें, क्रूज मिसाइलें, अपतटीय गश्ती जहाज, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली, अगली पीढ़ी के मिसाइल जहाज, लोटिंग डाक और पनडुब्बी रोधी रॉकेट लॉन्चर आदि शामिल थे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 31 मई 2021 को 108 सैन्य हथियारों एवं रक्षा उपकरणों के आयात पर रोक लगा दी हैं। इन 108 शस्त्र और रक्षा प्रणालियों में अगली पीढ़ी के कारवेट, एयरबोर्न अर्ली वार्निंग सिस्टम, टैंक के इंजन और राडार जैसे सिस्टम व साजो–सामान शामिल हैं। इस सूची में शामिल सभी 108 उपकरणों के आयात पर प्रतिबंध दिसम्बर 2021 से दिसम्बर 2025 तक की अवधि में उत्तरोत्तर प्रभावी रहेगा। भारत सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि वर्ष 2024 के बाद लम्बी दूरी के ग्लाइड बम भी स्वदेशी कंपनियों से ही खरीदे जाएंगे। ऐसे बमों को अपनी सीमा में रहते हुए एयरक्राट से दुश्मन की सीमा के काफी अन्दर तक के ठिकानों पर छोड़ा जा सकता है, इसलिए इसी साल से फाइटर एयरक्राट में इस्तेमाल होने वाले ज्यादातर बमों को स्वदेश में ही बनाया जाएगा। पहाड़ों पर लगने वाले लम्बी दूरी तक की टोह लेने वाले राडार भी इसी साल से भारतीय कंपनियों से ही खरीदे जा सकेंगे। आयात न किए जाने वाले उपकरणों की सूची 209 आइटमों की हो गई है।

रक्षा एवं वैमानिकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अनुसंधान एवं विकास पर जोर देने का निर्णय लिया है। इसके लिए उन्होंने अगले पांच वर्षों के लिए रक्षा उत्कृष्टता में नवाचार के लिए रक्षा नवाचार संगठन को पिछले माह 499.8 करोड़ रुपये की बजटीय सहायता को मंजूरी प्रदान कर दी है। इस धनराशि से रक्षा क्षेत्र में इस नए अन्वेशण के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि रक्षा उत्कृष्टता में नवाचार व रक्षा नवाचार संगठन का रक्षा और वैमानिकी क्षेत्र में आत्मनिर्भरता एवं स्वदेशीकरण को हासिल करना प्रमुख उद्देश्य है। आगामी पांच वर्षों के लिए दी गई 498.8 करोड़ रुपये की बजटीय सहायता वाली इस योजना का उद्देश्य रक्षा नवाचार संगठन फ्रेमवर्क के साथ लगभग 300 स्टार्ट अप्स, एमएसएमई, व्यक्तिगत नवोन्मेशकों और 20 साझेदार इनक्यूवेटर को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। यह कदम रक्षा जरूरतों के बारे में भारतीय नवाचार पारितंत्र में जागरूकता बढ़ाने और इसके विपरीत भारतीय रक्षा प्रतिष्ठान में उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अभिनव समाधान देने की क्षमता के प्रति जागरूकता पैदा करेगा। इससे रक्षा नवाचार संगठन अपनी टीम के साथ नवोन्मेशकों के लिए चौनल बनाने

में सक्षम होगा जिससे वे भारतीय रक्षा उत्पादन उद्योग के साथ जुड़ सकें। इस योजना का उद्देश्य भारतीय रक्षा और वैमानिकी क्षेत्र के लिए नई स्वदेशी तथा अभिनव प्रोद्योगिकियों के तेजी से विकास को सरल बनाना है। इसकी सफलता से अल्प समय सीमा में उनकी जरूरतों को पूरा किया जा सकेगा। भारतीय रक्षा और वैमानिकी के लिए सह–निर्माण को प्रोत्साहन के लिए अभिनव स्टार्ट–अप्स से संबंध स्थापित करने के लिए संस्कृति का विकास रक्षा और वैमानिकी क्षेत्र में प्रोद्योगिकी सह–निर्माण और सह–नवाचार की संस्कृति सशक्त बनाना और स्टार्ट–अप्स के बीच नवाचार को बढ़ावा देकर उन्हें इस व्यवस्था का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करना है।

रक्षा उत्पादन विभाग पार्टनर इनक्यूवेटर के रूप में रक्षा उत्कृष्टता में नवाचार नेटवर्क की स्थापना और प्रबन्धन के लिए रक्षा नवाचार संगठन को धन जारी करेगा। यह रक्षा एवं वैमानिकी जरूरतों के बारे में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के पार्टनर इनक्यूवेटर सहित अन्य प्रौद्योगिकी केन्द्रों के साथ संवाद करेगा। यह विभाग संभावित प्रौद्योगिकियों और संस्थाओं को शार्टलिस्ट करने तथा रक्षा एवं वैमानिकी सेटअप पर उनकी उपयोगिता व प्रभाव के संदर्भ में प्रौद्योगिकियों और उत्पादों का मूल्यांकन करेगा। रक्षा क्षेत्र की अन्य गतिविधियों में पायलटों को सक्षम करने के उद्देश्य के लिए निर्धारित नवाचार विधियों का उपयोग करके उन्हें सक्षम बनाना तथा उनका वित्तपोषण करना है। साथ ही प्रमुख नवीन प्रौद्योगिकियों के बारे में सशस्त्र बलों के शीर्ष नेतृत्व के साथ बातचीत करके उपयुक्त सहायता के साथ रक्षा प्रतिष्ठानों में उनको अपनाए जाने को प्रोत्साहित किया जाना शामिल है। प्रौद्योगिकियों को सफलता पूर्वक संचालित करते हुए स्वदेशीकरण को सुगम बनाना है।

मेरे गांव मेरे किसान

– सूरजभान दहिया

कोई आठ दशक होने को हैं जब महात्मा गांधी ने कहा था कि 'भारत का प्रारम्भ एवं अन्त गांव में होता है।' और यह तथ्य आज भी प्रांसगिक है अर्थात् भारत गांवों की उपेक्षा नही कर सकता। गांव यानी किसान का बसेरा, जब किसान गांव में सूरज की पहली किरण देखता है तो वह खेत में होता है और सूरज की अन्तिम किरण को भी खेत से अलविदा कहता है– इतना लंबा अन्तराल देश का पेट भरने हेतु खेत में बिताती है वह पवित्र आत्मा। आजादी के दस वर्ष बाद ही जब देश में अकाल पड़ा तो भूखे भारतीयों का पेट भरने के लिये विदेशों में हाथ फैलाने पड़े। परिणामस्वरूप भारत भिखारी देश कहलाने लगा। 1957 से 1967 तक हर साल 60 लाखटन अनाज का आयात किया जाता रहा। लेकिन जब लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' का आत्म उद्घोष किया तो किसान का स्वाभिमान जाग उठा और चन्द बरसो में उस ने देश में हरितक्रांति लाकर देश को खाद्यान के मामले में आत्मनिर्भर बना दिया। यही नहीं कोविड के महामारी काल में किसान ने कृषि उत्पाद में अभूतपूर्व वृद्धि की, परिणाम स्वरूप भारत ने अप्रैल 2020 से फरवरी 2021 के दौरान 2.74 लाख करोड़ रुपये का कृषि उत्पाद का निर्यात किया जबकि पिछले वर्ष उसी दौरान यह निर्यात 2.31 लाख करोड़ रुपये का हुआ था यानी कृषि उत्पाद निर्यात में 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी। फिर भी भारतीय किसान की हालात आज भी वैसी ही फटेहाल है जैसी पहले थी।

भारत का किसान विश्व किसान जनसंख्या का चौथा भाग हैं। पूरे देश में कोई 18 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में फसल उगाई जाती है और इस बड़े भू–भाग के मालिक किसान पर कॉरपोरेट जगत की बुरी निगाहें हैं। निकट भविष्य में विश्व खाद्य संकट की सम्भावनाएं बढ़ रही हैं और कॉरपोरेट लॉबी एग्री–बिजनस पर एकाधिकार बनाने के लिए आतुर है। भारत में कृषि विकास पर नाम मात्र का पूंजी निवेश होता आ रहा हैं, इसलिये अन्तरराष्ट्रिय कृषि ट्रेड में भारत का हिस्सा सिर्फ एक प्रतिशत के आसपास है। एक सर्वे के आधार नी यह पाया गया है कि भारत की रिटेल मार्केट कोई 400 बिलियन डालर की है जिसमें से 60 फीसदी रिटेल मार्केट फूड व ग्रोसरी की है। कॉरपोरेट जगत फूड मार्केट को हथियाना चाहता है और इसलिये वह छोटे व सीमांत किसानो के कृषि क्षेत्र को हथियाकर उन्हें बंधुवा मजदूर बनाकर फूडचेन का मालिक होने की तैयारी कर चुका है।

एक विहंगम दुश्य को समझिये – देश की कृषि के लिये समग्र, समेकित और दीर्घकालीन नीति एवं लक्ष्यपरक ग्रामीण विकास कार्यक्रम से खेती–किसानी जैसे पेशे को फायदे का सौदा बनाने की जहमत अभी तक नही उठाई गई जिससे पिछले कई वर्षों से कृषि क्षेत्र लगातार भीषण आपदा से जुझ रहा है। कॉरपोरेट और किसानों के बीच भेदभाव की नीति सरकार क्रियान्वित करती चली आ रही है। हर गुजरते साल के साथ किसानों पर कर्ज बढ़ता जा रहा है। केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री ने नवम्बर 2016 में संसद में स्वीकारा था कि किसान हर साल 12. 60 लाखे करोड़ रुपये के कर्जे तले दबे जा रहे हैं। किसानो की निरन्तर आत्महत्याएं इसी का दुष्परिणाम हैं। पर इसे समस्या का समाधान निकालने हेतु कोई प्रयास सरकार की तरफ से नही हो रहे हैं। उधर 2013–16 के बीच कॉरपोरेट को कर में 17.15 लाख करोड़ रुपये की बड़ी छूट दी गई और यह प्रक्रिया आज तक चल रही है यानी किसान की खुशहाली के प्रति उदासीनता और कॉरपोरेट के प्रति बड़ी सहानुभूति। इस भेदभाव की नीति के

कारण ही अब हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था चरमरा गई है। यह स्पष्ट है कि कोई भी तंत्र हो कारपोरेट सत्ता पर हावी रही है और शासित किसान सदैव शोषित होता रहा है। इतिहास में सिर्फ एक विवरण मिलता है जब चौ० छोटूराम की यनियनिष्ट पार्टी (जमीदारा पार्टी) की सरकार ने पंजाब में 1937 के पश्चात् किसान को शासक बना दिया था यद्यपि किसान समर्पित चौ0 छोटूराम ने इसके लिये अपना जीवनकाल अर्पित कर दिया था, वे सिर्फ 62 वर्ष की आयु में चल बसे थे।

किसान त्रास्दी महाभारत की तरह एक लंबी ऐतिहासिक त्रास्दी बन चुकी हैं। किसान हमारे जहन से गायब हो गया है। हरेक भंयकर सूखे से हम प्यार करने लग गये हैं। हमारे स्वीमिंगपूल पानी से लवोलब भरे रहते हैं और उन ग्रामीण महिलाओं की किसी को चिन्ता नहीं जो कोसो जा जा कर एक बाल्टी रेतीला पानी पीने के लिये रोज लाती हैं। हमारी नैतिकता में ग्रामीण परिवेश फ्रीज कर दिया गया है। हम सरसो के खेतों की बजाय डच के टूलिप बागो में मदहोश हो गये हैं। अर्बन रोमांस बन गया है कि भारतीय किसान कानूनों में जकड़ा रहे, ड्राईलैंड फार्मिंग करके मोटा अनाज उगा उगा कर इस जहां से रूकसत होता रहे – न मीडिया की सुर्खी बने और न सरकार की फजीहत – रायसीनाहिल की कुर्सी सलामत रहे। 'पिपली लाईव' फिल्म में एक पत्रकार पूछता है – "क्या नत्थाकिसान अभी तक मरा नहीं?" इस हकीकत से आप रूबरू तो हो रहे हैं पर चुप रहते हैं – क्यों?

कांग्रेस हाईकमान : जिसका एक ही कान

– कमलेश भारतीय

कैसी है यह कांग्रेस हाईकमान हाय। नवजोत को हंसाये, कैप्टन अमरेंद्र को रुलाये,,,, यह काम नहीं हाईकमान का। समाधान नहीं निकाला पंजाब की समस्या का बल्कि दरार और बढ़ा दी क्योंकि कैप्टन अमरेंद्र सिंह को सुनने या उनकी कही बात समझने की जरूरत ही नहीं समझी। सिर्फ उस कान से सुना जिससे नवजोत सिंह बोलने आते थे और दूसरे कान को बंद रखा जिससे कैप्टन अमरेंद्र सिंह अपनी बात कह रहे थे या कहना चाह रहे थे। ऐसे तो पंजाब के आने वाले विधानसभा चुनाव कैसे जीतोगे? यही रणनीति है तो बुरी तरह फेल है। जब पंजाब प्रदेश कांग्रेस को ही एकजुट न कर सके तो जीतने की उम्मीद कैसे ?

कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने चिट्ठी लिखी जिसे पढ़ने की जहमत भी नहीं उठाई कांग्रेस हाईकमान ने। दूसरे लोगों ने पढ़ी। न मिलीं सांसदों से और न ही मिलने की जरूरत समझी । बस, अपना फैसला सुनाया बल्कि थोप दिया पंजाब पर। अब थोपने से क्या सब कुछ ठीक हो गया?

माना कि नवजोत सिद्धू एक लोकप्रिय चेहरा हैं पर राजनीति के नहीं – कपिल शर्मा शो और क्रिकेट जगत के। जब चुनाव थे और ये नवजोत महोदय पैसे कमाने बिग बॉस के शो में बैग कंधे पर लटका कर निकल गये थे। यह प्रतिबद्धता है इनकी पार्टी के प्रति। अभी पार्टी में विवाद चल रहा था और ये महाश्य आप पार्टी के कसीदे पढ़ रहे थे । यह है नवजोत की अवसरवादिता। आब यह शख्स सिखायेगा कि पार्टी के प्रति वफादार रहो। बिजली बिलों और गुरुवाणी की बेअदबी की बात इतनी विपक्ष ने नहीं उछाली जितनी नवजोत ने और यह नेता सिखायेगा कि पार्टी की सरकार को सही सहयोग दो जैसा इन्होंने दिया और कांग्रेस हाईकमान को देखिए कि बिना दूसरा कान खोले और कुछ सुने नवजोत को पंजाब प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने में देर नहीं लगाई। बेशक यह कहा गया कि कैप्टन अमरेंद्र सिंह ने सहर्ष हाईकमान के फैसले को स्वीकार कर लिया है और जिस सार्वजनिक माफी की मांग की, वह कहां रह गयी?

क्या हुआ तेरा वादा

वो कसम, वो इरादा ,,,

कांग्रेस हाईकमान को यह एक कान से सुनना बहुत महंगा पड़ता आ रहा है और महंगा पड़ता रहेगा ,,,

यह चेतावनी मेरी नहीं। कांग्रेस जनों की है । फिर चाहे वे पंजाब के हों या हरियाणा के। हरियाणा में भी एक कान बंद कर रखा है और शायद राजस्थान में भी । कान खोलो और आंखें खोलो हाईकमान और देखो कि क्या हो रहा है और आप कैसे फैसले किये जा रही हो ,,,,

राजद्रोह कानून को तर्कपूर्ण बनाने पर विचार जरूरी

– शंभू भद्रा

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 2014 में जब केंद्र में भाजपा जीत राजग की सरकार आई थी तो उसके बाद पीएम ने कई मंचों पर ऐलान किया कि उनकी सरकार ने देश में पुराने पड़ चुके अंग्रेजों के जमाने के एक हजार से अधिक कानूनों को खत्म कर दिया है। इसके लिए पूर्व की कांग्रेस सरकारों की आलोचना भी की गई थी कि उसने अंग्रेज जमाने के भारतीयों को सताने के लिए बनाए गए बेकार कानूनों को खत्म नहीं किया। उस वक्त मोदी सरकार की मुक्त कंठ से तारीफ हुई।

आज करीब सात साल बाद मोदी सरकार के सामने यक्ष प्रश्न खड़ा है कि अंग्रेज जमाने के राजद्रोह कानून अस्तित्व में क्यों है? राजद्रोह कानून (सेडिशन लॉ) को देश के सर्वोच्च न्यायालय ने अंग्रेजों के जमाने का कॉलोनियल कानून बताते हुए केंद्र सरकार से सवाल किया है आखिर आजादी के 75 साल बाद भी देश में इस कानून की क्या जरूरत है? इसे खत्म क्यों नहीं करते। अदालत ने यह भी कहा कि संस्थानों के संचालन के लिए ये कानून बहुत गंभीर खतरा है। ये अधिकारियों को कानून के गलत इस्तेमाल की बड़ी ताकत देता है और इसमें उनकी कोई जवाबदेही भी नहीं होती।

सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी रमना की तीन जजों वाली बेंच की टिप्पणी गौर करने लायक है, जिसमें बेंच ने कहा है कि राजद्रोह की धारा 124 ए का बहुत ज्यादा गलत इस्तेमाल हो रहा है। ये ऐसा है कि किसी बढ़ई को लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी दी गई हो और वो इसका इस्तेमाल पूरा जंगल काटने के लिए ही कर रहा हो। इस कानून का ऐसा असर पड़ रहा है। अगर कोई पुलिसवाला किसी गांव में किसी को फंसाना चाहता है तो वो इस कानून का इस्तेमाल करता है। लोग डरे हुए हैं। दरअसल, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीयों को दबाने के लिए भी ऐसा ही कानून इस्तेमाल हुआ था। विवाद यह है कि क्या ये कॉलोनियल है, तो इसी तरह का कानून महात्मा गांधी को चुप कराने के लिए अंग्रेजों ने इस्तेमाल किया था। इसी कानून के जरिए आजादी के आंदोलन को दबाने की कोशिश की गई थी। जायज सवाल है कि क्या आजादी के 75 साल बाद भी इसे हमारे देश के कानून की किताब में होना चाहिए? इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने 2015 में ही रद के बावजूद आईटी एक्ट की धारा 66ए के इस्तेमाल जारी रहने व लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज होने के लिए भी पुलिस तंत्र पर भी नाराजगी जताई थी।

कोर्ट ने कहा कि हम किसी राज्य सरकार या केंद्र सरकार पर आरोप नहीं लगा रहे हैं, लेकिन देखिए कि आईटी एक्ट की धारा 66ए से कितने ही दुर्भाग्यशाली लोग परेशान हो रहे हैं और इसके लिए किसी की भी जवाबदेही तय नहीं की गई है। जहां तक राजद्रोह कानून की बात है तो इसका इतिहास बताता है कि इसके तहत दोष तय होने की दर बहुत कम है। हाल के वर्षों में राजद्रोह कानून के दुरुपयोग के अनेक मामले सामने आए, जिसमें पुलिस अपराध सिद्ध नहीं कर पाई, आरोपित अदालत से बरी हो गए। एनसीआरबी के 2014 से 2019 तक के डाटा के मुताबिक आईपीसी 124 ए के तहत 326 केस दर्ज हुए, जिनमें 559 लोगों को गिरफ्तार किया गया, केवल 10 आरोपित ही दोषी साबित हो सके। शीर्ष अदालत ने राजद्रोह कानून की वैधता को परखने की बात कह कर नई उम्मीद जताई है।

कोर्ट की चिंता इस कानून के गलत इस्तेमाल और अधिकारियों की जवाबदेही तय न होने को लेकर है। इस कानून का अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और बोलने की आजादी पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। केंद्र ने इस कानून को खत्म न करने व इसके लिए गाईडलाइन तय करने की मांग की है। मतलब साफ है कि केंद्र इसे खत्म नहीं करना चाहता। वर्तमान में लोकतंत्र व संविधान की मजबूती और सरकार के लोकतांत्रिक चरित्र के लिए जरूरी है कि देश में नागरिकों को किसी कानून का भय न हो। हालांकि सही मायने में राष्ट्र के खिलाफ कोई जाता है तो, उसे सजा का प्रावधान होना चाहिए, पर वह जन आवाज दबाने के लिए दुरुपयोग ना हो। शीर्ष अदालत व सरकार को इस पर ध्यान देना चाहिए।

Subhash Chandra Bose--An Assessment

Ramniwas Malik

Life of Subhash Chandra Bose had been full of sacrifices, trials and tribulations, passion, dogged determination and ups and downs. Unfortunately, he could not get well deserved success in his adventures to beat the British Empire and snatch independence for the people of India. There were five main causes for his failure to reach the goal post.

1. He was impetuous. He suffered from the complex of intellectual (prodigious) arrogance and thought that he was always right.
2. There was nobody to channelise his energy and passion after the death of great C.R.Das. His elder brother was a very brilliant and wise person. But he did not guide him in his political journey and only performed the role of an indulgent and doting elder brother.
3. Subhash never respected senior leaders like Sardar Patel, Raja Ji and Prasad. These leaders were the backbone of the Congress party and commanded huge respect from the people of whole of India. He developed pathological hatred against them because they had opposed the of move of C.R.Das to enter the Councils in 1922 and also because they were blind followers of Gandhi Ji. He released his steam against them in his autobiography titled "The Indian Struggle". He had called Gandhi Ji as piece of old furniture and Sardar Patel as city bumpkin. What he said against Gandhi Ji and others was partly correct but his style of castigating them was unacceptable and indigestible.
4. He never controlled the flight of his imagination and started suffering from delusions in the later part of his life.

5. He was unnecessarily bogged down by the bogey of left vs right.

Subhas was not a good student of politics (an art of the possible) and the aforesaid deficiencies stunted his political growth considerably. Basically, the main cause of all his problems was that he did not have a political Guru after the death of great C.R.Das who could help him to make necessary course corrections and take right steps at the right time. He did not learn to walk with others and adopted a non-conformist attitude. He also did not learn the lesson of avoiding unimportant confrontations with the Raj and avoid unnecessary arrests. Congress Pary gave him very high positions in 1927 when he was hardly 30. He was President of BPCC, General Secretary of Congress and member of Nehru panel to draw up the desired constitution for India. But he could not handle his greatness and started ploughing his lonely furrow. His best moment came again when Gandhi Ji made him the Congress President against the opposition of Sardar Patel in March 1938 when he was only 41 years old. He did wonderful work during one year of his presidentship and gave a new direction to the party. But he was trying to do two wrong things. Firstly, he tried to bring the left wingers to dominate the party and secondly he openly started advocating to take the side of Germany in the impending war against Britain. He was secretly in contact with officials of German embassy.

He became overambitious and asked for a second term to revitalise the party. Till now he had not expressed regret for projecting senior leaders in poor light in his book. These leaders (Sardar Patel, Raja Ji, Rajendra Prasad) commanded great respect from whole of India. Therefore, there was no question of supporting his case for a second term as President of the party by them. Still Gandhi Ji politely requested him not to go in for the election because he wanted Dr. Kalam Azad to head the party for the next term in order to blunt the tirade of Jinnha that Congress was a Hindu organisation. Subhash was not going to lose anything by honouring the simple request of Gandhi Ji. However, he fought the election and defeated the official candidate of Congress by 372 votes. The seniors were afraid that the party would be hijacked by the left wingers and they were right to some extent to think so. But what happened at Tripuri session brought great disgrace to Gandhi Ji and the senior leaders of the party. One could never imagine that they could be so discourteous to ailing Subhash.

There were two schools of thoughts in 1919 to win freedom for the country. Lokmanya Tilak suggested that a delegation of leaders of all the political parties should go to England and meet the Prime Minister and other senior leaders of political parties in England and ask them to give a definite timeline to grant full Dominion status to India and in return Indian leaders would ensure full constructive cooperation to the government if the timeline was strictly adhered to. Dominion Status meant Swaraj within the Empire. Tilak very wisely did not insist for complete independence for two reasons. Firstly because the British government would never entertain that idea and secondly because complete independence would be at a stone's throw once Dominion Status was granted. One cannot say if British government would have agreed to the suggestion of Tilak. But this effort was worth making as rejection of this request would have enraged the people of India and created a fertile ground for launching a strong freedom movement. But nobody listened to Tilak as everybody was enamored of Gandhi Ji at that time.

British government had already outlined its policy of granting democratic rights to Indians through the 20th August 1917 statement of Edward Montague in the British Parliament. This statement said three things.

1. India would remain integral part of England.
2. Democratic rights would be granted in instalments and the number and duration of instalments would depend upon the political seasoning of Indian leaders.
3. The statement indicated towards self-government with truncated Dominion status. The word Dominion was not used in the Montague statement.

Gandhi Ji and the Congress did not make any move to attain Dominion status till 1928 when Motilal Nehru report made its recommendation for full Dominion status as enjoyed by Canada. The demand for complete independence or Purna Swaraj was made in the 1929 Congress session at Lahore. The resolution stated that the ultimate aim of the Congress struggle was to attain complete independence. Why the expression "ultimate" was not objected by the delegates including Subhash is still unknown. When it was discussed how to go about to win the complete independence, Subhash made a very impractical suggestion to form a parallel government of independent India. He and Jawaharlal had moved an equally frivolous amendment to sever all connections with British government during the Calcutta session. Sardar Patel was justified to some extent to call Subhash a man of unsteady mind (a man always in haste and making half-baked hasty decision).

Philosophy of Gandhi Ji was of a higher level. He thought that before launching a full throated movement for complete independence, it was essential to create uneasiness and hatred in the minds of people of whole of India against the Raj to make them ready for a big fight. Therefore he believed that the movement for complete independence should be preceded by movements on smaller issues to create the necessary momentum and simultaneously embarrass the government so that Britishers would start feeling that they would have to go sooner than later. The Non-co-operation movement of 1920-22 had achieved exactly the same objective. But Subhash wanted early results. He wanted a direct and nonviolent fight with the Empire soon after the Lahore session.

The success of the direct fight depended on how long people were ready to stay in jails. Health of both Subhash and Sarat Bose was not sturdy enough to stay in jails for a long period. Sarat Bose was diabetic and the only earning member of a big family. Subhash had the nagging problem of weak lungs. Others could stay long but not the common Congress worker. His spirit broke down after a stay of 18 months because of oppressive environment in jails and condition of poverty of the families left behind. There was no Nelson Mandela in the Congress who could remain in jail for 27 long years. Subhash drifted from the mainstream leadership after 1930. But one grave mistake, the Congress party made throughout the movement was that it never thought and talked of amalgamating two Indias (provincial India and princely India) into one great India. Gandhiji, or for that matter, any other leader never asked Lord Irvine to start a parallel democratic process in the princely states where people (one third of the total population of India) were leading lives worse than the slaves.

Finding no way to do anything in India, he took a calculated risk to go to Germany on 16th January 1941. He did not get the support of Hitler to help him to attack India from Kabul side. This was not possible because Germany was at war with Russia. Hitler even did not sign the putative draft for supporting Indian cause for freedom. Subhash embarked on another very hazardous journey on 9th February 1943 in a submarine from Germany and reached Sumatra on 6th May after 87 days. But he left the 4000 Indian prisoners of war who were handed over to him to form a fighting regiment (called Indian Legion) in lurch. Germans used them to fight against the Allied forces along the French coast. The fate of survivors is still unknown.

Subhash reached Tokyo and met the Prime Minister of Japan who made a declaration to support the cause of Indian freedom. Then he returned to Singapore on 2nd July and took the command of INA and became its Supreme Commander. He now started making necessary preparation for a joint attack with Japanese army against the Allied forces in Kohima and Imphal.

Subhash was a civilian entity and had little knowledge of military warfare. His officers like Shah Nawaz, Gurbax Dhillon and Prem Sehgal were only of captain's rank in the British-Indian army and were incapable of handling a major offensive. His request to spearhead the attack with one INA Division was rejected by Japanese commanders. Only one regiment under Shah Nawaj was allowed to move along the 33rd Division of Japanese army to attack the 17th Indian Division stationed at Tiddim near Indo-Burma border. Two regiments joined the battle very late. The attack on Kohima and Imphal on 7th March 1944 ended in a complete disaster. Only 600 INA soldiers returned safe and sound. 2000 soldiers were seriously injured and took long time to recover. Others died due to bullets, hunger and diseases. Japanese casualties were 75000. The dream of "Dili Chalo" was shattered completely. Subhash did not take the moral responsibility for this ignominious and disastrous defeat. He still continued to chant the "Dili Chalo" slogan and tried his best to conceal the news of Imphal-Kohima offensive from the soldiers of the 2nd and 3rd INA Divisions. This offensive was bound to end in disaster because General Mutaguchi, Commander of the offensive thought that British army would be as brittle as it was in 1942 and took this offensive in a very casual manner. Subhash too put blind faith in the invincibility of Japanese army inspite of the shattering defeat of Japanese army in the Arakans offensive launched a month before. Neither Subhash nor Mutaguchi made a post mortem of the causes of the shattering defeat and did not learn any lesson from there. No general or Commander worth his name would commit this kind of lapse in any battle whether big or small. The disaster at Arakans was obviously due to air and tank attacks by Allied forces, diseases and starvation. Exactly the same scene was repeated in Kohima and Imphal. Even then Subhash and Mutaguchi lost a big opportunity by not attacking and capturing Dimapur after bypassing Kohima. Had they done so, then it would have been very easy to capture Dimapur and reach Calcutta and take over the administration. Subhash would have done the rest. His dream of Dili Chalo would have been fulfilled very easily. This is how he lost the first golden opportunity to fulfill his dream of freeing India from the clutches of the Raj. Also Subhash just did not bother to discuss the war strategy with Mutaguchi before the start of the offensive. After the Arakans fiasco, Subhash should have told Mutaguchi that he had no chance of victory till he sought the help of Airforce and the regiments were armed with anti-aircraft guns.

Topographical feature of Kohima and Imphal offensive did not favour the aggressor. That is why General Slim wanted to be attacked by Japanese than attacking the Japanese. But Subhash did not know anything about military warfare and his commanders too could not point out the deficiencies in the Mutaguchi plan. The Burma offensive by General Slim proved to be a bigger disaster both for the Japanese army and the INA. Japanese soldiers at least fought to their last cartridge but INA soldiers just deserted and surrendered before the parent army. Subhash also lost the last chance of his glory when he did not listen to the advice of Col M.Z.Kiani to stay in Singapore. Instead, he left for Tokyo without giving any details of his final destination. He had declared many times that he would sink or swim along with the INA comrades. But he did not fulfill that promise now. Had he remained at Singapore, then he would have a very glorious return to India along with other INA comrades. Whole of India would have been at his feet as people loved Subhash so much because of his tendency to take up highly courageous and risky steps for snatching independence from the empire with a solo effort.

This was the second golden opportunity he missed due to wrong advice of his colleagues. Britishers were alredy preparing to leave India in August 1945 due to the wisdom displayed by Lord Wavell and Britishers could not dare to touch Subhash as they could not do no harm to others.

Many people believe and rightly so that what was the guarantee that Japanese after capturing India would not have installed a puppet government under Subhash Bose as they did the same in Burma, Malaya and Andaman and Nicobar Islands. Chatterji was right when he told Subhash that there was lot of inconsistency between what Japanese said at Tokyo and what they practised at the ground level. But the other axiomatic side of the story was that Americans were unstoppable from the eastern side and they were bent upon defeating Japan and continue to attack her till she surrendered. Then all the Japanese forces had to withdraw from all the conquered nations including India. Then Subhash would have ruled the roost and India would have remained united.

So in the final analysis, the supreme sacrifices, risks and sufferings made by Subhash during his career spanning 24 years could not fructify because he tried to walk alone and did not sink or swim with his comrades at the denouement. Normally, a single sinker cannot sink the boat. The moral of the tempestuous life of Subhash is that if a leader prefers to walk alone on the road less travelled then he must have a Chankya with him. Subhash did not have one and so lost two golden opportunities to achieve success in his great endeavor. In order to achieve success in the minefield of politics, one must have a team of dedicated and wise adherents and he has to be a strong and undaunted team leader. The earlier big mistakes were to stand for re-election, not meeting Captain Mohan Singh, not reaching out to all the prisoners of war at Singapore and blindly trusting the invincibility of Japanese army.

Still the supreme sacrifices of Subhash and his dogged determination and solo effort to fight against the mighty empire forms the glorious chapter of India's freedom struggle and will continue to inspire the future generations.

जय हरफूल

वीर हरफूल श्योराण का जन्म 1892 ई० में भिवानी जिले के लोहारू तहसील के गांव बारवास में एक जाट क्षत्रिय परिवार में हुआ था।उनके पिता एक किसान थे। बारवास गांव के इन्द्रायण पाने में उनके पिता चौधरी चतरू राम सिंह रहते थे।उनके दादा का नाम चौधरी किताराम सिंह था। 1899 में हरफूल के पिताजी की प्लेग के कारण मृत्यु हो गयी। इसी बीच उनका परिवार जुलानी (जींद) गांव में आ गया। यहीं के नाम से उन्हें वीर हरफूल जाट जुलानी वाला कहा जाता है।

हरफूल की माता जी को उनके देवर रत्ना का लत्ता उढा दिया गया। हरफूल अपने मामा के यहां तोशाम के पास संडवा (भिवानी) गांव में चले गये।

जब वे वापिस आये तो उनके चाचा के लड़कों ने उसे प्रोपर्टी में शेयर देने से मना कर दिया। जिस पर बहुत झगड़ा हुआ और हरफूल को झूठी गवाही देकर पुलिस ने गिरतार कर लिया। और हरफूल पर थानेदार ने बहुत अत्याचार किये।

उनकी माता ने हरफूल का पक्ष लिया मगर उनकी एक न चली बाद में उनकी देखभाल भी बन्द हो गयी।

सेना में 10 साल

उसके बाद हरफूल सेना में भर्ती हो गए। उन्होंने 10 साल सेना में काम किया। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में भी भाग लिया। उस दौरान ब्रिटिश आर्मी के किसी अफसर के बच्चों व औरत को घेर लिया। तब हरफूल ने बड़ी वीरता दिखलाई व बच्चों की रक्षा की। अकेले ही दुश्मनों को मार भगाया। फिर हरफूल ने सेना छोड़ दी। जब सेना छोड़ी तो उस अफसर ने उन्हें गिट मांगने को कहा गया तो उन्होंने फोल्डिंग गन मांगी। फिर वह बंदूक अफसर ने उन्हें दी।

थानेदार व अपने परिवार से बदला

उसके बाद हरफूल ने सबसे पहले आते ही टोहाना के उस थानेदार को ठोक दिया जिसने उसे झूठा पकड़ा व टॉर्चर किया था। फिर उसने अपने परिवार से जमीन में हिस्सा मांगा तो चौधरी कुरड़ाराम जी के अलावा किसी ने सपोर्ट न किया और भला बुरा कहा। वे उनकी माता की मृत्यु के भी जिम्मेदार थे तो बाकियों को हरफूल ने ठोक दिया। फिर हरफूल बागी हो गया उसने अपना बाद का जीवन गौरक्षा व गरीबों की सहायता में बिताया।

गौरक्षा– सवा शेर

पहला हत्था तोड़ने का किस्सा– 23 श्रनसल 1930 – टोहाना में मुस्लिम राँघड़ों का एक गाय काटने का एक कसाईखाना था। वहां की 52 गांवों की नैन खाप ने इसका कई बार विरोध किया। कई बार हमला भी किया जिसमें नैन खाप के कई नौजवान शहीद हुए व कुछ कसाई भी मारे गए। लेकिन सफलता हासिल नहीं हुई क्योंकि ब्रिटिश सरकार मुस्लिमों के साथ थी और खाप के पास हथियार भी नहीं थे।

तब नैन खाप ने वीर हरफूल को बुलाया व अपनी समस्या सुनाई। हिन्दू वीर हरफूल भी गौहत्या की बात सुनकर लाल पीले हो गए और फिर नैन खाप के लिए हथियारों का प्रबंध किया। हरफूल ने युक्ति बनाकर दिमाग से काम लिया। उन्होंने एक औरत का रूप धारण कर कसाईखाने के मुस्लिम सैनिकों और कसाइयों का ध्यान बांट दिया। फिर नौजवान अंदर घुस गए उसके बाद हरफूल ने ऐसी तबाही मचाई कि बड़े–बड़े कसाई उनके नाम से ही कांपने लगे। उन्होंने कसाइयों पर कोई रहम नहीं खाया। सैंकड़ों मुस्लिम राँघड़ो को मौत के घाट उतार दिया और गऊओं को मुक्त करवाया। अंग्रेजों के समय बूचड़खाने तोड़ने की यह प्रथम घटना थी।

इस महान साहसिक कार्य के लिए नैन खाप ने उन्हें सवा शेर की उपाधि दी व पगड़ी भेंट की। उसके बाद तो हरफूल ने ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जहां उन्हें पता चला कि कसाईखाना है, वहीं जाकर धावा बोल देते थे। उन्होंने जींद, नरवाना, गौहाना, रोहतक आदि में 17 गौहत्थे तोड़े। उनका नाम पूरे उत्तर भारत में फैल गया। कसाई उनके नाम से ही थर्राने लगे । उनके आने की खबर सुनकर ही कसाई सब छोड़कर भाग जाते थे। मुसलमान और अंग्रेजों का कसाईवाड़े का धंधा चौपट हो गया।

इसलिए अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गयी। मगर हरफूल कभी हाथ न आये। कोई अग्रेजों को उनका पता बताने को तैयार नहीं हुआ।

गरीबों का मसीहा

वीर हरफूल उस समय चलती फिरती कोर्ट के नाम से भी मशहूर थे। जहाँ भी गरीब या औरत के साथ अन्याय होता था वे वहीं उसे न्याय दिलाने पहुंच जाते थे। उनके न्याय के भी बहुत से किस्से प्रचलित हैं।

हरफूल की गिरतारी व बलिदान

अंग्रेजों ने हरफूल के ऊपर इनाम रख दिया और उन्हें पकड़ने की कवायद शुरू कर दी। इसलिए हरफूल अपनी एक ब्राह्मण धर्म–बहन के पास झुंझनु (राजस्थान) के पंचेरी कलां पहुंच गए। इस ब्राह्मण बहन की शादी भी हरफूल ने ही करवाई थी। यहां का एक ठाकुर भी उनका दोस्त था। वह इनाम के लालच में आ गया व उसने अंग्रेजों के हाथों अपना जमीर बेचकर दोस्त व धर्म से गद्दारी की।

अंग्रेजों ने हरफूल को सोते हुए गिरतार कर लिया। कुछ दिन जींद जेल में रखा लेकिन उन्हें छुड़वाने के लिये हिन्दुओं ने जेल में सुरंग बनाकर सेंध लगाने की कोशिश की और विद्रोह कर दिया। इसलिये अंग्रेजों ने उन्हें फिरोजपुर जेल में चुपके से ट्रांसफर कर दिया।

बाद में 27 जुलाई 1936 को चुपके से पंजाब की फिरोजपुर जेल में अंग्रेजों ने उन्हें रात को फांसी दे दी। उन्होंने विद्रोह के डर से इस बात को लोगों के सामने स्पष्ट नहीं किया। उनके पार्थिव शरीर को भी हिन्दुओं को नहीं दिया गया। उनके शरीर को सतलुज नदी में बहा दिया गया।

इस तरह देश के सबसे बड़े गौरक्षक, गरीबों के मसीहा, उत्तर भारत के रॉबिनहुड कहे जाने वाले वीर हरफूल सिंह ने अपना सर्वस्व गौमाता की सेवा में कुर्बान कर दिया। मगर कितने शर्म की बात है कि बहुत कम लोग आज उनके बारे में जानते हैं। कई गौरक्षक संगठन भी उनको याद नहीं करते। गौशालाओं में भी गौमाता के इस लाल की मूर्तियां नहीं हैं।

ऐसे महान् गौरक्षक को मैं नमन करता हूँ।

युधिष्ठर को पूर्ण आभास था, कि कलयुग में क्या होगा ?

पाण्डवों का अज्ञातवाश समाप्त होने में कुछ समय शेष रह गया था। पाँचो पाण्डव एवं द्रोपदी जंगल मे छूपने का स्थान ढूंढ रहे थे। उधर शनिदेव की आकाश मंडल से पाण्डवों पर नजर पड़ी शनिदेव के मन विचार आया कि इन 5 में बुद्धिमान कौन है परीक्षा ली जाय।

शनिदेव ने एक माया का महल बनाया कई योजन दूरी में उस महल के चार कोने थे, पूरब, पश्चिम, उतर, दक्षिण। अचानक भीम की नजर महल पर पड़ी और वो आकर्षित हो गया। भीम यधिष्ठिर से बोला– भैया मुझे महल देखना है। भाई ने कहा जाओ। भीम महल के द्वार पर पहुंचा वहाँ शनिदेव दरबान के रूप में खड़े थे। भीम बोला– मुझे महल देखना है! शनिदेव ने कहा– महल की कुछ शर्त है।

1. शर्त महल में चार कोने हैं, आप एक ही कोना देख सकते हैं।
2. शर्त महल में जो देखोगे उसकी सार सहित व्याख्या करोगे।
3. शर्त अगर व्याख्या नहीं कर सके तो कैद कर लिए जाओगे।

भीम ने कहा – मैं स्वीकार करता हूँ ऐसा ही होगा। और वह महल के पूर्व छोर की और गया। वहां जाकर उसने अद्भूत पशु पक्षी और फूलों एवं फलों से लदे वृक्षों का नजारा देखा। आगे जाकर देखता है कि तीन कुंए है अगल–बगल में छोटे कुंए और बीच में एक बडा कुआं। बीच वाला बड़े कुंए में पानी का उफान आता है और दोनों छोटे खाली कुओं को पानी से भर देता है। फिर कुछ देर बाद दोनों छोटे कुओं में उफान आता है। तो खाली पड़े बड़े कुंए का पानी आधा रह जाता है। इस क्रिया को भीम कई बार देखता है। पर समझ नहीं पाता और लौटकर दरबान के पास आता है।

दरबान – क्या देखा आपने ?

भीम – महाशय मैंने पेड़ पौधे पशु पक्षी देखा वो मैंने पहले कभी नहीं देखा था जो अजीब थे। एक बात समझ में नहीं आई छोटे कुंए पानी से भर जाते हैं। बड़ा क्यों नहीं भर पाता ये समझ में नहीं आया। दरबान बोला आप शर्त के अनुसार बंदी हो गये हैं। और बंदी घर में बैठा दिया।

अर्जुन आया बोला – मुझे महल देखना है, दरबान ने शर्त बता दी और अर्जुन पश्चिम वाले छोर की तरफ चला गया। आगे जाकर अर्जुन क्या देखता है। एक खेत में दो फसल उग रही थी एक तरफ बाजरे की फसल दूसरी तरफ मक्का की फसल। बाजरे के पौधे से मक्का निकल रही है तथा मक्का के पौधे से बाजरा निकल रही है। अजीब लगा कुछ समझ नहीं आया वापिस द्वार पर आ गया। दरबान ने पूछा क्या देखा, अर्जुन बोला महाशय सब कुछ देखा पर बाजरा और मक्का की बात समझ में नहीं आई। शनिदेव ने कहा शर्त के अनुसार आप बंदी हैं।

नकुल आया बोला – मुझे महल देखना है। फिर वह उत्तर दिशा की और गया वहाँ उसने देखा कि बहुत

सारी सफेद गायें हैं। जब उनको भूख लगती है। तो अपनी छोटी बछियों का दूध पीती है। उसे कुछ समझ नहीं आया। द्वार पर आया।

शनिदेव ने पूछा क्या देखा ? नकुल बोला महाशय गाय बछियों का दूध पीती है। यह समझ नहीं आया तब उसे भी बंदी बना लिया।

सहदेव आया बोला – मुझे महल देखना है और वह दक्षिण दिशा की और गया अंतिम कोना देखने के लिए क्या देखता है। वहां पर एक सोने की बड़ी शिला एक चांदी के सिक्के पर टिकी हुई डगमग डोले पर गिरे नहीं छूने पर भी वैसे ही रहती है। समझ नहीं आया वह वापिस द्वार पर आ गया और बोला सोने की शिला की बात समझ में नहीं आई तब वह भी बंदी हो गया।

चारों भाई बहुत देर से नहीं आये तब युधिष्ठिर को चिंता हुई। वह भी द्रोपदी सहित महल में गये। भाइयों के लिए पूछा तब दरबान ने बताया वो शर्त अनुसार बंदी है।

युधिष्ठिर बोला भीम तुमने क्या देखा ? भीम ने कुंऐ के बारे में बताया।

तब युधिष्ठिर ने कहा – यह कलियुग में होने वाला है एक बाप दो बेटों का पेट तो भर देगा परन्तु दो बेटे मिलकर एक बाप का पेट नहीं भर पायेंगे। भीम को छोड़ दिया।

अर्जुन से पुछा तुमने क्या देखा ? उसने फसल के बारे में बताया।

युधिष्ठिर ने कहा– यह भी कलियुग में होने वाला है। वंश परिवर्तन अर्थात ब्राह्मण के घर शूद्र की लड़की और शूद्र के घर बनिए की लड़की ब्याही जायेंगी। अर्जुन भी छूट गया।

नकुल से पूछा तुमने क्या देखा तब उसने गाय का वृतान्त बताया।

तब युधिष्ठिर ने कहा – कलियुग में माताऐं अपनी बेटियों के घर में पलेंगी बेटी का दाना खायेंगी और बेटे सेवा नहीं करेंगे। तब नकुल भी छूट गया।

सहदेव से पूछा तुमने क्या देखा, उसने सोने की शिला का वृतांत बताया।

तब युधिष्ठिर बोले – कलियुग में पाप धर्म को दबाता रहेगा, परन्तु धर्म फिर भी जिंदा रहेगा खत्म नहीं होगा।।

आज के कलयुग में यह सारी बातें सच साबित हो रही है ।।

मुझे अच्छा लगा आपके समक्ष रखा है।

कविता

– मन्दीप, जज

हम वो है जिसे पैदा होते ही उम्मीदों से लाद दिया जाता है ।
फिर थोड़ा बड़ा होते ही किताबों का बोझ डाल दिया जाता है ।
बड़े लाड़ से रखा जाता है बडा प्यार दिया जाता है ।
कभी कभी गलतियों पे डाँट भी दिया जाता है

ओर कभी कभी शरारतों पे मार भी दिया जाता है ।
ओर फिर हमारे रोने पे हमे पुचकार दिया जाता है और बड़े प्यार से कह दिया जाता है के तुम लड़के हो ऐसे रोया थोड़ी जाता है ।
हमारे आंसुओ को हमारी आंख में कैद कर दिया जाता है और भावनाओ को बांध दिया जाता है ।
हमारी काबिलियत को हमारे मार्क्स पे जज किया जाता है ओर हमारी औकात हमारे कपड़ो से ही बता दी जाती है ।

हमारी ताकत हमारी बाजुओ से नाप ली जाती है
ओर हमारी खूबसूरती हमारी शक्ल से समझ ली जाती है ।
हमारी नाकामयाबी पर हम पर हंसा जाता है
ओर सफलता पर किस्मत का टैग लगा दिया जाता है ।

हमारी फीलिंग्स का गला घोंट दिया जाता है और इमोशन्स को फांसी पर चढ़ा दिया जाता है ।
ओर बड़ी आसानी से कह दिया जाता है के तुम लड़के हो ऐसे टूटा थोड़ी जाता है ।

'रामायण' क्या है ?

अगर कभी पढ़ो और समझो तो आंसुओ पे काबू रखना.....
रामायण का एक छोटा सा वृतांत है, उसी से शायद कुछ समझा सकूँ... एक रात की बात हैं, माता कौशल्या जी को सोते में अपने महल की छत पर किसी के चलने की आहट सुनाई दी।
नींद खुल गई, पूछा कौन हैं ?
मालूम पड़ा श्रुतकीर्ति जी (सबसे छोटी बहु, शत्रुघ्न जी की पत्नी) हैं ।
माता कौशल्या जी ने उन्हें नीचे बुलाया
श्रुतकीर्ति जी आईं, चरणों में प्रणाम कर खड़ी रह गई
माता कौशल्या जी ने पूछा, श्रुति ! इतनी रात को अकेली छत पर क्या कर रही हो बेटी ?
क्या नींद नहीं आ रही ?
शत्रुघ्न कहाँ है ?
श्रुतिकीर्ति की आँखें भर आईं, माँ की छाती से चिपटी,
गोद में सिमट गईं, बोलीं, माँ उन्हें तो देखे हुए तेरह वर्ष हो गए ।
उफ !
कौशल्या जी का हृदय काँप कर झटपटा गया ।
तुरंत आवाज लगाई, सेवक दौड़े आए ।
आधी रात ही पालकी तैयार हुई, आज शत्रुघ्न जी की खोज होगी, माँ चली ।
आपको मालूम है शत्रुघ्न जी कहाँ मिले ?
अयोध्या जी के जिस दरवाजे के बाहर भरत जी नंदिग्राम में तपस्वी होकर रहते हैं, उसी दरवाजे के भीतर एक पत्थर की शिला हैं, उसी शिला पर, अपनी बाँह का तकिया बनाकर लेटे मिले !!
माँ सिराहने बैठ गईं,
बालों में हाथ फिराया तो शत्रुघ्न जी नेआँखें खोलीं,
माँ !
उठे, चरणों में गिरे, माँ ! आपने क्यों कष्ट किया ?
मुझे बुलवा लिया होता ।
माँ ने कहा,
शत्रुघ्न ! यहाँ क्यों ?"
शत्रुघ्न जी की रुलाई फूट पड़ी, बोले– माँ ! भैया राम जी पिताजी की आज्ञा से वन चले गए,
भैया लक्ष्मण जी उनके पीछे चले गए, भैया भरत जी भी नंदिग्राम में हैं, क्या ये महल, ये रथ, ये राजसी वस्त्र, विधाता ने मेरे ही लिए बनाए हैं ?
माता कौशल्या जी निरुत्तर रह गईं ।
देखो क्या है ये रामकथा...
यह भोग की नहीं....त्याग की कथा हैं..!!
यहाँ त्याग की ही प्रतियोगिता चल रही हैं और सभी प्रथम हैं, कोई पीछे नहीं रहा... चारो भाइयों का प्रेम और त्याग एक दूसरे के प्रति अद्भुत–अभिनव और अलौकिक हैं ।
"रामायण" जीवन जीने की सबसे उत्तम शिक्षा देती हैं।
भगवान राम को 14 वर्ष का वनवास हुआ तो उनकी पत्नी सीता मईया ने भी सहर्ष वनवास स्वीकार कर लिया..!!
परन्तु बचपन से ही बड़े भाई की सेवा मे रहने वाले लक्ष्मण जी कैसे राम जी से दूर हो जाते!
माता सुमित्रा से तो उन्होंने आज्ञा ले ली थी, वन जाने की..
परन्तु जब पत्नी "उर्मिला" के कक्ष की ओर बढ़ रहे थे तो सोच रहे थे कि माँ ने तो आज्ञा दे दी,
परन्तु उर्मिला को कैसे समझाऊंगा.??
क्या बोलूँगा उनसे.?
यहीं सोच विचार करके लक्ष्मण जी जैसे ही अपने कक्ष में पहुंचे तो देखा कि उर्मिला जी आरती का थाल लेके खड़ी थीं और बोलीं–
"आप मेरी चिंता छोड़ प्रभु श्रीराम की सेवा में वन को जाओ. ..मैं आपको नहीं रोकूँगीं। मेरे कारण आपकी सेवा में कोई बाधा न आये, इसलिये साथ जाने की जिद्द भी नहीं करूंगी।"
लक्ष्मण जी को कहने में संकोच हो रहा था.!!
परन्तु उनके कुछ कहने से पहले ही उर्मिला जी ने उन्हें संकोच से बाहर निकाल दिया..!!
वास्तव में यहीं पत्नी का धर्म है..पति संकोच में पड़े, उससे पहले ही पत्नी उसके मन की बात जानकर उसे संकोच से बाहर कर दे.!!
लक्ष्मण जी चले गये परन्तु 14 वर्ष तक उर्मिला ने एक तपस्विनी की भांति कठोर तप किया.!!
वन में "प्रभु श्री राम माता सीता" की सेवा में लक्ष्मण जी कभी सोये नहीं , परन्तु उर्मिला ने भी अपने महलों के द्वार कभी बंद नहीं किये और सारी रात जाग जागकर उस दीपक की लौ को बुझने नहीं दिया.!!
मेघनाथ से युद्ध करते हुए जब लक्ष्मण जी को "शक्ति" लग जाती है और हनुमान जी उनके लिये संजीवनी का पर्वत लेके लौट रहे होते हैं, तो बीच में जब हनुमान जी अयोध्या के ऊपर से गुजर रहे थे तो भरत जी उन्हें राक्षस समझकर बाण मारते हैं और हनुमान जी गिर जाते हैं.!!

तब हनुमान जी सारा वृत्तांत सुनाते हैं कि, सीता जी को रावण हर ले गया, लक्ष्मण जी युद्ध में मूर्छित हो गए हैं।

यह सुनते ही कौशल्या जी कहती हैं कि राम को कहना कि "लक्ष्मण" के बिना अयोध्या में पैर भी मत रखना। राम वन में ही रहे.!!

माता "सुमित्रा" कहती हैं कि राम से कहना कि कोई बात नहीं. .अभी शत्रुघ्न है.!!

मैं उसे भेज दूंगी..मेरे दोनों पुत्र "राम सेवा" के लिये ही तो जन्मे हैं.!!

माताओं का प्रेम देखकर हनुमान जी की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। परन्तु जब उन्होंने उर्मिला जी को देखा तो सोचने लगे कि, यह क्यों एकदम शांत और प्रसन्न खड़ी हैं?

क्या इन्हें अपनी पति के प्राणों की कोई चिंता नहीं?

हनुमान जी पूछते हैं– देवी!

आपकी प्रसन्नता का कारण क्या है? आपके पति के प्राण संकट में हैं...सूर्य उदित होते ही सूर्य कुल का दीपक बुझ जायेगा।

उर्मिला जी का उत्तर सुनकर तीनों लोकों का कोई भी प्राणी उनकी वंदना किये बिना नहीं रह पाएगा.!!

उर्मिला बोलीं– "

मेरा दीपक संकट में नहीं है, वो बुझ ही नहीं सकता.!!

रही सूर्योदय की बात तो आप चाहें तो कुछ दिन अयोध्या में विश्राम कर लीजिये, क्योंकि आपके वहां पहुंचे बिना सूर्य उदित हो ही नहीं सकता.!!

आपने कहा कि, प्रभु श्रीराम मेरे पति को अपनी गोद में लेकर बैठे हैं..!

जो "योगेश्वर प्रभु श्री राम" की गोदी में लेटा हो, काल उसे छू भी नहीं सकता..!!

यह तो वो दोनों लीला कर रहे हैं..

मेरे पति जब से वन गये हैं, तबसे सोये नहीं हैं..

उन्होंने न सोने का प्रण लिया था..इसलिए वे थोड़ी देर विश्राम कर रहे हैं..और जब भगवान् की गोद मिल गयी तो थोड़ा विश्राम ज्यादा हो गया...वे उठ जायेंगे..!!

और "शक्ति" मेरे पति को लगी ही नहीं, शक्ति तो प्रभु श्री राम जी को लगी है.!!

मेरे पति की हर श्वास में राम हैं, हर धड़कन में राम, उनके रोम रोम में राम हैं, उनके खून की बूंद बूंद में राम हैं, और जब उनके शरीर और आत्मा में ही सिर्फ राम हैं, तो शक्ति राम जी को ही लगी, दर्द राम जी को ही हो रहा.!!

इसलिये हनुमान जी आप निश्चिन्त होके जाएँ..सूर्य उदित नहीं होगा।"

राम राज्य की नींव जनक जी की बेटियां ही थीं...

कभी "सीता" तो कभी "उर्मिला"..!!

भगवान् राम ने तो केवल राम राज्य का कलश स्थापित किया ..परन्तु वास्तव में राम राज्य इन सबके प्रेम, त्याग, समर्पण और बलिदान से ही आया .!!

जिस मनुष्य में प्रेम, त्याग, समर्पण की भावना हो उस मनुष्य में राम हि बसता है...

कभी समय मिले तो अपने वेद, पुराण, गीता, रामायण को पढ़ने और समझने का प्रयास कीजिएगा .,जीवन को एक अलग नज़रिए से देखने और जीने का सऊर मिलेगा .!!

"लक्ष्मण सा भाई हो, कौशल्या माई हो,
स्वामी तुम जैसा, मेरा रघुराइ हो..
नगरी हो अयोध्या सी, रघुकुल सा घराना हो,
चरण हो राघव के, जहाँ मेरा ठिकाना हो..
हो त्याग भरत जैसा, सीता सी नारी हो,
लव कुश के जैसी, संतान हमारी हो..
श्रद्धा हो श्रवण जैसी, सबरी सी भक्ति हो,
हनुमत के जैसी निष्ठा और शक्ति हो... "
ये रामायण है, पुण्य कथा श्री राम की।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 29/5'6" MBA from MDU Rohtak. Employed in Geological Survey of India, Ministry of Mines, Govt. of India. Family settled at Rohtak. Living with Nana/Nani. Avoid Gotras: Malik, Panghal, Dahiya. Cont.: 9468402962
- SM4 Jat Girl (DOB April, 88) 33/5'3" Law Graduate, MA political science, B.Ed. Husband expired due to Covid. No baby. Father retired lecturer. Mother Teacher in service. Avoid Gotras: Nain, Boora, Bolan. Cont.: 9896964434
- SM4 Jat Girl (DOB 16.05. 89) 32/5'4" B.Sc., M.Sc, LLB, LLM, NET qualified in Law. Practicing as Advocate in Punjab & Haryana High Court and Distt. Court Panchkula. Younger brother pursuing CA final, M. Com. Father retired from Ayush Department Haryana. Mother Hindi Teacher in Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Dalal. Cont.: 9416561936
- SM4 Jat Girl (DOB 16.09. 95) 25/5'4" M. Com. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Dahiya. Cont.: 8295254387, 9466413387.
- SM4 Jat Girl (DOB 02.06.93) 28/5'3" BPED, MPED, PGTCA & Yoga. Pursuing Diploma in Yoga. Family settled at Pinjore. Father employed in Haryana Government. Mother housewife. Avoid Gotras: Mor, Gill, Lather. Cont.: 9466767508, 9416425810
- SM4 Jat Girl (DOB 14.07.97) 24/5'4" M.Sc. Physics, Pursuing B.Ed. Father, mother Government teacher. Avoid Gotras: Mehla,

Malik, Mann. Cont.: 9050988983

- SM4 Jat Girl 28/5'3" B.Tech. Employed as Bank Officer in SBI. Father retired class-I 0fficer from Haryana Government. Mother Bank Officer in PNB. Preferred Tri-city based well settled officer boy of educated family. Avoid Gotras: Sehrawat, Lohan, Ahlawat. Cont.: 9877956770, 9815041361
- SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 28/5'2" B.Tech. (Civil) from P.U. , M. Tech & PhD from IIT Delhi. Employed as Assistant Professor IIT Dhanbad with salary Rs. 85000/- per month. Father Dy. Chief Engineer, HMT Pinjore. Mother Lecture Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 9996545234
- SM4 Jat Girl (DOB 18.10.95) 25/5'5" B.Tech. (CSE) from SRM university Chennai. MBA (Finance) from Christ University Banglore. Working in E and Y Global as Auditor in Gurugram from one year. Avoid Gotras: Jatain, Boora, Rathi. Cont.: 9467294225
- SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 30/5'2" MCA, Working in Mohali Avoid Gotras: Gulia, Malhan, Dalal. Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Girl (DOB 04.01.92) 29/5'4" MSc. Physics, BEd. CTET. Employed as teacher in Panchkula. Father in Government Job. Family settled in Zirakpur. Avoid Gotras: Malik, Redhu, Siwach. Cont.: 9888396275
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.94) 26/5'4" MSc. Math from P. U. , B.Ed from Ranbir Singh University Jind. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Jani, Pawar, Kaliraman. Cont.: 9416083928
- SM4 Jat Girl (DOB 05. 08.97) 23/5'5" BBA from Punjab University, MTTM from IGNOU. Working Free Lancing in Event Wedding Planning from last four years. Father Government employee. Mother MA, B.Ed Housewife. Avoid Gotras: Bura, Rathi, Chahal. Cont.: 9592088413
- SM4 Jat Girl (DOB Nov. 94) 26/5'1" NET in Commerce, B.Ed, Pursuing PhD. from M.D.U. Rohtak. Wworking as Guest Faculty at CDLU Sirsa. Father in Haryana Government. Mother housewife. Preferred match in Government job. Avoid Gotras: Gill, Goyat, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Girl (DOB 07.11.92) 28/5'4" B. Tech (Electronics & communication) MBA (Business Analyst & Marketing) from CGC Landra. Working in YES bank Chandigarh. Father's own business and family settled at Panchkula. Mother housewife. Avoid Gotras: Saharan, Dabas, Samota.Cont.: 9671922745
- SM4 Jat Girl 28/5'3" B.Tech. Employed as Bank Officer in SBI. Father retired class-I 0fficer from Haryana Government. Mother Bank Officer in PNB. Preferred Tri-city based well settled officer boy of educated family. Avoid Gotras: Sehrawat, Lohan, Ahlawat. Cont.: 9877956770, 9815041361
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.Tech. (C.S.). Working as Senior Software Developer in Coforge Ltd. Noida with Rs. 10 lakh package PA. Father working in AFT Chandigarh. Mother home maker. Brother Army Officer (NDA). Avoid Gotras: Goyat, Khatkar, Nain. Cont.: 8427737450, 7988624647
- SM4 Jat Girl 29/5'4". B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy 27/5'8" B. Tech, M.Tech. Employed in ONGC, Govt. of India Undertaking under Ministry of Petroleum and Natural Gas. Avoid Gotras: Malik, Panghal, Dahiya. Cont.: 9468402962
- SM4 Jat Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, ITI Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842
- SM4 Jat Boy (DOB 19.08. 92) 28/5'8" B. com, M. Com., CA final year. Father retired from Ayush Department Haryana. Mother Hindi Teacher in Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Dalal. Cont.: 9416561936
- SM4 Jat Boy 28/6'2" Captain in Army. District Yamuna Nagar (Haryana). Avoid Gotras: Darri, Sindhad, Sindhu. Cont.: 7717397230
- SM4 Jat Boy 28/5'10", MBA (HR). Working in Maruti Suzuki Gurgaon in Middle Management Cadre. Family based at Gurgaon and Panchkula. Father, mother class-I officer retired. Both sisters married & employed in Centre Govt. as class-I officer. Residential/ agriculture property at Panchkula/Gurgaon/Palwal. Preferred match from Delhi NCR and Govt. job. Avoid Gotras:Tewetia, Jatrana, Dagar. Cont.: 9988442438
- SM4 Jat Boy (DOB19.01.96) 25/5'8", BSc. Nautical Science. Schooling form St. Thomas School, Rai Sports School and Sarvodaya Vidyalaya Delhi. Working as IIIrd Officer, Anglo Eastern Shipping Management with Rs. 15 lakh package PA. Father SDO in Haryana Govt. Avoid Gotras:Khatra, Dangi, Jatrana. Cont.: 8684043291
- SM4 Jat Boy 26/5'8", MBA, Working as Department Manager in Canada (wholly PR). Family settled in Delhi. Contact if any willing to settle in Canada. Avoid Gotras: Bura, Sheokand, Chopra. Cont.: 9810526274
- SM4 Jat Boy (DOB 20.04.91) 30/5'8", B. Tech. (Computer Science) Own business in Sparrow GG Solutions _OPC Pvt. Ltd. with Rs. 6 lakh income PA. Mother Assistant in Haryana Government. Avoid Gotras:Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy (DOB 13.10.92) 28/6'2", B. Tech. CSE, MS (Business Analyst) Working as Product Manager in MNC Chandigarh with Rs. 40 lakh package PA. Avoid Gotras: Bhambu, Sangwan, Mohil. Family settled in Panchkula. Cont.: 9464259180
- SM4 Jat Boy (DOB14. 03. 95) 26/5'10", B.A. Doing MA. Working in Municipal Corporation Chandigarh as clerk on contract basis. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Pachar. Cont.: 9463961502
- SM4 Jat Boy (DOB 21.07.89) 31/5'11", B.Sc. Working with CN Railway (Canada) . Avoid Gotras: Sangwan, Sheoran, Punia. Cont.: 9888476688
- SM4 Jat Boy26/6'1"Polytechnic Electric Diploma.Working in MNC with package of Rs. 4 lakh PA. Mother retired teacher. Brother, sister well settled. Preferred tall girl in service.Avoid Gotras: Mor, Malik, Budhwar Cont.: 8295865543
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lacs PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras: Jatyan, Duhan, Dagar. Cont.: 9818724242.

अब आया है ऊँट पहाड़ के नीचे!

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

अभी तक तो हमारे नये–नये सत्ताधीश केवल धर्म की धुंध का घटाटोप अंधकार आच्छन्न करके सत्ता के सिंहासन पर आरूढ़ हो रहे थे। उन्होंने अल्पसंख्यकवाद का आडम्बर रचकर बहुसंख्यकों को अपने संग–साथ लगा रक्खा था। ताकि बहुजन गण श्रमजीवी–मजदूर और किसान कभी वर्गीय आधार पर संगठित न हो सकें। वे भी अब उस सर्वस्वहारी पूँजीवाद के विरुद्ध है जोकि विकराल महा–अजगर बनकर राष्ट्र की सकल सम्पदा को ही निगलने को आकुल और आतुर है। पिछली बार भी जब इन धर्म–धुरन्दरों की सरकार दूसरी सहस्त्रब्दी के अन्त में आयी थी, तब भी उसी तथाकथित स्वदेशी और सांस्कृतिक सरकार ने इसी प्रकार से भारत–वसुन्धरा की बहुमूल्य सम्पदा का इसी प्रकार को नीलाम औने–पौने में किया था।

उदाहरण के लिए मुम्बई से लेकर अहमदाबाद तक तब की सारी ही सरकारी कॉटन मिलें घाटे में चलती दिखाकर बंद करवा दी थी। आज जहाँ पर कभी सैंकड़ों कपड़ा या टैक्सटाईल मिलों की चिमनी काला–कजरारा धुँआ उगलकर लाखों मजदूरों की आजीविका का उपक्रम किया करती थीं अब वही विरान मैदानों में परिवर्तित हो गई हैं। अब केवल बालक–बच्चे उन बीहड़ मैदानों में क्रिकेट का खेल ही तो खेल सकते हैं। ऐसे ही मुम्बई के शेरोटन होटल जिसका बाजार मूल्य 2000 ई० में कम से दो सौ करोड़ रूपये का था, वह भी कौडियों के ही भाव तबकी अटल और अचल सरकार ने केवल दस–बीस करोड़ में ही बेच खाया था।

इसी प्रकार से पास्को सरकारी कम्पनी जिसका बाजार–मूल्य तब पाँच सौ करोड रुपये का बाजार में था, उसको भी हमारे सांस्कृतिक सन्नायकों ने तब केवल पचास करोड में ही अपने दानदाता लक्ष्मीपतियों के ही हवाले कर दिया था। तब 24 दलों के गठबन्धन की उस सरकार ने केवल एक ही कार्य स्वदेशी कार्यक्रम के दौरान यह किया था कि महाराष्ट्र विद्युत–निगम जोकि पाँच रूपये प्रति यूनिट की सम्पूर्ति राज्य–सरकार को कर रहा थी उसके स्थान पर ऐनरान नामक विदेशी कम्पनी को वही कार्य दिया था, जोकि नौ नकद न तेरह उधार में ही अपना अटल विश्वास रखती थी।

(क) राष्ट्रीय सम्पदा का शील–हरण?

इस प्रकार से जहाँ पर एक ओर राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्तियों का औने–पौने में सौदा किया जा रहा था, वहीं पर दूसरी ओर स्वदेशी का शंखनाद भी साथ ही साथ किया जा रहा था। इस बार जब वही सांस्कृतिक सरकार केन्द्रीय स्वर्ण–सिंहासन पर जब दोबारा सत्तारूढ हुई है तो अबकी बार तो उसने खुला खेल फरूखाबादी ही शुरू जैसे कर दिया है। क्योंकि अब तो महादैत्याकार रेल विभाग से लेकर के इंडिया–एयरवेज के विमानों तक की बोली लगा दी गई है। जो लालकिला हमारे राष्ट्रीय–गौरव का स्थायी ही स्मारक है और जिस पर हमारे अभिनव इन्द्र प्रतिवर्ष स्वतंत्रता की विमल–पताका का ध्वजारोहण भी करते हैं। इस बार तो उसके अनुरक्षण का भी कार्य एक ऐसी स्वदेशी कम्पनी को सौंप दिया गया है कि जिसको राष्ट्रीय–स्मारकों के संरक्षण का कदाचित भी अनुभव नहीं है। बस वह गुजरात से सम्बन्धित है, क्या उसकी यही एकमात्र योग्यता कम महत्त्वपूर्ण है? इसके विपरीत जिस हमदर्द दवा कम्पनी को दिल्ली के राष्ट्रीय स्मारकों के अनुरक्षण एवं संरक्षण का व्यापक वर्षों का अनुभव है, उसको वह अवसर क्यों नही दिया गया है?

अब तो भारत–सरकार का दूरसंचार विभाग और दूरभाष ही केवल बेचने से बचा हुआ था लेकिन अब तो उसकी भी बोली शीघ्र ही रिलायन्स के हाथों बोली जाने वाली है। क्योंकि वही तो अब भारत–भूतल का अभिनव धन–कुबेर यक्षराज है जोकि स्वर्गस्थ देवताओं का भी धनपति है। वही अब केवल गुजरात के ही कुबेर अम्बानी और अडाणी(अदानी) नामक नये लक्ष्मीपुत्र कर सकते हैं। जैसेकि आज सारी की सारी कुशल मेधा–मति और धन–सम्पदा की सकल संविदा इन गुजराती वणिक–व्यापारियों ने ही ओट ली है। अब केवल वे वाणिज्य–व्यापार ही क्यों अपितु सत्ता की शक्ति का भी मोल–भाव प्रदेशों में सरकारों को गिरा और बनवाकर भी करने लगे हैं। राजनीति, आज वारांगनावत र्निनैतिक नंगी हो चली है। उसने लोकलाज रूपी अपने परिधानों को उतारकर नग्न–नर्तन करना अब आरंभ कर दिया है। जबकि लोकराज तो लोकलाज से ही चलता है, यही कभी किसान केसरी श्री देवीलाल ने कहा था।

(ख) कल्याणकारी राज्य की संकल्पना कहाँ गई?

आजकल भारत–भूतल का विश्व वैभव अनुदिन निजी हाथों में औने–पौने दामों में सौंपा जा रहा है। देखिये कि पाँच वर्ष पुरानी मशीनों का मूल्य हमारे देवदलों की दिव्य कृष्टि में शून्य–ब्रह्म के ही समान हैं। तो इसी प्रकार से बीस वर्षीय भव्य भवन का मूल्य भी अब शून्य के ही समान आँका जा रहा है। भारत–पैट्रोलियम तक को उसी अम्बानी–अडानी को सौंपकर जन–गण की खुली लूट का उन्मुक्त अवसर ही उपलब्ध इस प्रकार से कराया जा रहा है। जो ईंधन का तेल बाजार भाव में लगभग 20 या 22 रूपये प्रतिलीटर के हिसाब से विदेशों से

सस्ते दामों में आ रहा है। वही अब उससे चार और पाँच गुणा मंहगे दामों में ही जन–सामान्य को देकर कृतार्थ किया जा रहा है। ऊपर से तुर्रा यह है कि सांस्कृतिक सरकार ही स्वदेशी और जनकल्याण कामी भी है।

ऐसे ही शिक्षा–व्यवस्था से लेकर चिकित्सा के प्रबन्ध तक को भी हमारे शाही शहनशाह अपने उदार दानदाताओं के ही हाथों में पकरीय कन्या–धन की भाँति निधड़क भाव से सौंपते चले जा रहे हैं। तभी दो तीन भारत के लक्ष्मीपतियों की गणना सेठ अमीरचन्द और मेहताबराय के समान अब जगत–सेठों में भी होने लगी है। कभी जिन बंगाली सेठों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना को राशन की आपूर्ति करके विपुल वैभव जुटाया था और बंगाल के नबाव के विरुद्ध सत्ता–मुक्त करने का भी कुत्सित षडयंत्र भी उन्होंने ही रचा था। वही सत्ता–स्थापना एवं सत्ता–परिवर्तन का कार्य हमारे वर्तमान के गुजराती बनिया–व्यापारी भी तो करने लगे हैं।

अतः आज देश की अर्थ–व्यवस्था रसातल में है तो बेरोजगारी अपने चरमोत्कर्ष पर है। क्योंकि भारतवर्ष की धन–सम्पदा को हमारे वर्तमान इन्द्रों ने खुलकर मोहिनी मूर्तियों पर ही लुटाया है। या फिर पण्ड़े–पुजारियों के लिए भव्य देवालयों का ही नव निर्माण किया है। अपने लिए बहुमूल्य अमेरिका के राष्ट्रपति जैसे बहुमूल्य विमान खरीदे हैं या फिर वैस्टा परियोजना के नाम से कर्जदार और निर्धन देश की नई भारत सरकार एक नये हजारों करोड़ की लागत से अभिनव संसद सौध के नवनिर्माण में ही सतत संलग्न है।

(ग) देश की यह दुर्दशा क्यों है?

जबकि वस्तुस्थिति यह है कि देश की आर्थिक अवस्था आजकल जर्जर ही हो चली है। ऊपर से कोरौना का काला कहर है। जिससे कि सारे ही कलकारखानों का ही कारोबार कम से कम ही हो चला है। करोड़ों मजदूर आज सडकों पर दर–दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं। विगत एक वर्ष के भीतर ही लगभग दो करोड़ लोगों की नियमित सेवाएँ समाप्त हो चली हैं। सर्विस सैक्टर भी अब बेहाल है तो रेलें भी श्वांस रोककर स्टेशनों पर खड़ी होकर अपने नूतन स्वामियों का ही नित्यप्रति इंतजार कर रही हैं। वायुयान व्योमबिहारी विहगों के समान नभचार अब कहाँ कर पा रहे हैं। मानो कि जैसे अब उनके पंखों में भी जंग ही लग गया है। कारखानों की चिमनियों ने भी अब श्वांस–प्रश्वास लेना जैसे छोड़ ही दिया है। ऐसी स्थिति में केवल एकमात्र कृषि–कर्म क्षेत्र से ही देश की आशाभरी आँखें लगी हुई थीं।

लेकिन भारत–सरकार ने कारौना के ही कलुष–काल में आनन–फानन में ही तीन काले कानून लाकर उसको भी जुए के दाँव पर धर्मराज युधिष्ठिर की भाँति आज लगा दिया है। कृषि–व्यवस्था को भी अब बजाय लघु एवं सीमान्त किसानों के हाथों से छीनकर उसकी भी वरमाला वह उन्हीं अभिनव धनकुबेरों के गले में डालने जा रही है। जोकि उसको उपज रूपी सुन्दरता का बाजार में ही मनमाना भाव आकेंगें। अब सरकार–दरबार का कोई भी हस्तक्षेप उस व्यापार में नहीं होगा। अतएव कृषि मंडियां भी बंद ही हो जाएगी। संयुक्त पंजाब में सर्वप्रथम दीनबंधु चौ० छोटूराम ने ही 1938 ई० में सरकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य की अनिवार्य व्यवस्था करके किसानों की उपजों के उचित बाजार भाव की व्यवस्था की थी। उसी के ही तो परिणामस्वरूप हरित–क्रांति का शंखनाद हुआ था और भारतवर्ष खाद्यान्नों में पूर्णतया आत्मनिर्भर भी बना था। नये तीन कृषि–सम्बन्धी बिल किसानों की उपजों के दामों को अब बाजारू व्यवस्था की ही दया–माया पर छोडने वाले हैं। वही किसानों से सस्ता अनाज खरीदकर उनका भंडारण करके लक्ष्मीपति उससे बाद में मनमाना मुनाफा भी कालाबाजरी करके कमायेंगें ही।

(घ) काले कृषि–कानूनों की मार?

इसी प्रकार से ठेकेदारी की जो व्यवस्था नये कृषि कानूनों में है। उससे उनकी असहाय स्थिति चम्पारण (बिहार) के नील को उगाने वाले बंधुआ किसानों जैसी ही हो जाएगी। क्योंकि संविदा की शर्तों के आधार पर ही उनको तब फसलें उगानी होंगी। यदि उनकी गुणवत्ता जरा भी कम हुई तो ठेकेदार कम्पनी उस उपज को खरीदने से भी मना कर सकती है। जैसाकि पंजाब और मध्यप्रदेश के टमाटर उत्पादक–किसानों के साथ विगत वर्षों में व्यवहार किया गया है। इसी प्रकार से उत्तर प्रदेश और बिहार के आलू उत्पादक किसानों ने भी विगत वर्षों में उचित दाम न मिलने पर अपनी उपज को सड़कों पर डालकर बिखेरा था। कॉन्ट्रैक्ट कृषि–व्यवस्था के अनुसार अपने द्वारा उस कृषि–भूमि में निविष्ट पूँजी की भी क्षतिपूर्ति उसकी नीलामी लगाकर कम्पनी कर सकती है। जिस प्रकार से चीन ने अपने ऋण–जाल में मछली की भाँति उलझाकर श्रीलंका से उसका एक बन्दरगाह हथिया लिया है। अब पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह के साथ भी वही सब कुछ भविष्य में होने वाला है।

यहाँ यही गनीमत है कि इस विषय में अपनी स्वदेशी और सांस्कृतिक सरकार फिर भी चौकस और चौकसी ही है। क्योंकि उसने अपने सारे ही बन्दरगाह और रेलवे स्टेशन बजाय विदेशी मेहमानों के अपनी स्वदेशी मित्र–मंडली को ही उसके हाथ पीले किए हैं। क्या यह कुछ कम स्वदेशीपन और देशभक्ति का उज्जवल एवं अनुपम उदाहरण है? सरकार ने वीतराग और सर्वस्व त्यागी संन्यासियों के समान अपना सारा ही दुरूह दायित्व सेठ–साहूकारों के हाथों सौंपकर अपने जनतांत्रिक कार्यभारों से ही जैसे एकाएक अवकाश ही पा लिया है। अब

उसका कार्य केवल कर या राजस्व की उगाही करना भर ही है। उसमें तो यह सरकार अपने मध्यकालीन मुगल शासन से भी आगे हैं, क्योंकि वह तो केवल केन्द्रीय राजपथों से ही पथकर वसूलती थी लेकिन अपनी स्वदेशी सरकार तो अब प्रान्तीय राजपथों से भी जमकर पथकर या टोल–टैक्स वसूल कर रही है। जबकि इसी को वह विपक्ष में रहते 'जजिया–कर' ही बताया करती थी। लेकिन अब तो हमें ऐसे भाता है कि मानों जैसे वही वर्तमान–काल की तीर्थ कर हो। समरथ को नहीं दोष गुंसाई' इसी को तो कहते हैं।

(घ) भला मुगलों से क्या मुकाबला करोगे!

जिस मुगलकालीन शासन को अपने सांस्कृतिक राष्ट्रवादी सदैव अपने विषैले बयानों में विदेशी और विधर्मी ही बखानते हैं, संभवतः इन पोंगा–पंथियों को यह रहस्य ज्ञात नहीं है कि उसी शासन–काल में भारत की अर्थ–व्यवस्था विश्व में सिरमौर थी। तब हम कहीं चीन से भी विश्व–वैभव में इक्कीस ही थे, बीस नहीं थे आजकल की भाँति। तब हमारा वस्त्र–व्यापार विश्वभर में ही फैला हुआ था। ढाका की मलमल और रेशम पूरे ही पश्चिमी ऐशिया (ईरान–बगदाद) से लेकर मध्य एशिया तक जाया करती थी। उस अकेले व्यवसाय में ही कम से कम दस प्रतिशत श्रमिकों की जनसंख्या खपी हुई थी और उसकी अजस्र आजीविका का एकमात्र आधार भी वही पवित्र व्यवसाय था। इसी प्रकार से लगभग उतने ही प्रतिशत व्यक्ति चर्मकारी के व्यवसाय में संलग्न थे। क्योंकि कृषि–कार्य के चरस और बटलोई से लेकर बेंत तक तब उसी से बनते थे तो चमडे के जूते तो सभी वर्गों के लोग पहनते ही थे। लगभग 40 प्रतिशत लोग विनिर्माण कार्यों में संलग्न थे।

दक्षिणी भारत और पश्चिमी व पूर्वी भारत के सागर–तटों पर स्थित बंदरगाहों से तब काली मिर्च, जायफल, लौंग और इलायची जैसे मसालों का भी व्यापक कराधार मिश्र और अरब जगत तक होता ही था। बहरीन(ब्रह्मर्षि) से लेकर अनातोलिया(तुर्की) और बगदाद–ईरान तक भारत का मसाला–व्यापार फैला हुआ था। बल्कि उसके विनिमय में ही सोना भारत की ओर उधर का इधर खिंचा चला आ रहा था। तभी तो उसी तथाकथित यवन–काल में ही भारत 'सोने की चिडिया' कहलाया था। यही क्यों, स्थल मार्गों और जलीय नदी–नाव पथों पर मुगलकाल में ही बाद नामान्त वाले न थे। नगरों का आवासन यमुना और गंगा के उर्वर अर्न्तवेद या दोआबे में किया गया था। जिनसे कि अर्न्तदेशीय व्यापार का भी विकास व्यापारिक पूँजी के निर्माण से हो सका था। आगरा से लेकर इलाहाबाद तक यमुना से सामान लाया ले जाया जा सकता था। इसी प्रकार से स्थल मार्ग से आगरा से लेकर दिल्ली से लाहौर–मुल्तान और पेशावर तक बनजारे बैलों पर लादकर अपने माल की खेप पहुँचाया करते थे, और तो क्या, उसी कलिकाल में मेहराबदार(अर्धचन्द्राकार) स्थापत्य–शिल्प का भी विकास हुआ था। तो मस्जिदों एवं मन्दिरों के चन्द्राकार गोल गुम्बद भी उसी कला काल में उठाये गये थे। मेहराबदार स्थापत्य शिल्प के आधार पर ही डॉटदार पुल एवं छतों का निर्माण किया था तो कढाई–बुनाई के क्षेत्र में तकली के स्थान पर चरखा भी उसी काल में आया था। इसी प्रकार से कृषि–कार्य में सिंचाई के लिए चरस व कुली के स्थान पर रहट के आने से उत्पादन में अभूतपूर्व बढ़ोतरी उसी तथाकथित यवन काल में जाकर हो सकी थी।

(च) हिंदू–राज्यकाल की मृग–मरीचिका!

जिस गुप्त–काल या पूर्व मध्यकाल अथवा हिन्दू अथवा राजपूत काल को हमारे पोंगा–पुंगव भारतवर्ष के इतिहास का स्वर्णिम युग मान बैठे हैं, उसी काल में भारत वर्ष नितान्त निर्धन भी था क्योंकि नकद नारायणी स्वर्ण या रजत मुद्राओं से तब उसका राजकोष सर्वथा रिक्त ही था। तभी तो पूर्व मध्यकाल से लेकर राजपूत–काल तक में ही सामन्तवाद की फसल फूली और फली थी। कारण, गुप्त एवं राजपूतकालीन शासकों के पास अपने उच्चाधिकारियों को वेतन के भुगतान के लिए सोने या चाँदी के सिक्के ही कहाँ थे। क्योंकि तब हमारा विदेशी व्यापार ब्राह्मणवाद किंवा मनुवाद की पौराणिक पृवृत्तियों के चलते क्षयमान ही था। अतएव राजा लोग अपने सामन्तों और जागीरदारों को भुक्तियाँ अथवा भू–प्रदेश देकर ही उनकी क्षतिपूर्ति किया करते थे। जैसेकि वर्तमान का बुंदेलखंड तब 'जयशक्ति' नामक चंदेल शासक को मिला हुआ था। अतएव उसका नामकरण तब 'जैजाक–भुक्ति' ही हो गया था। इसी प्रकार से आम्बेर अथवा जयपुर के अ□चल का नामकरण तब दूदाँढ भुक्ति ही तो था। यूरोप में रेशम का कीडा–पालन प्रारम्भ होने के कारण भी भारतीय विदेशी वस्त्र–व्यापार तब ह्रासशील ही हो चुका था। अतएव नगद नारायणी धातु निर्मित मुद्राओं के स्थान पर शासकीय सवाओं के विनिमय में तब सामन्तों को वे भोगभूमियाँ अथवा भुक्तियाँ ही राज–काज के संचालन और जीवन–निर्वाह हेतु दी जाया करती थी।

मोर लैंड जैसा अंग्रेज लेखक भारत के मध्यकालीन यात्र–वृतान्तों के आधार पर यह उल्लेख करता है कि 16वीं शताब्दी के मुगल शासनकाल में ही शाही–सेवकों को वेतन का नगद भुगतान ही किया जाया करता था। जोकि बीसवीं शताब्दी के बिट्रिश शासनकाल के वेतनमान से कहीं ऊँचे और अच्छे थे। इतना ही नहीं, अकबर के शासन–प्रशासन में 37 प्रतिशत हिन्दुओं की सक्रिय सहभागिता का भी जिक्र उसने किया है। अकबर ने काबुल (अफगानिस्तान) को विजित करके उसका उपशासक या राज्यपाल(सूबेदार) बजाय किसी मुगल या पठान के केवल जयपुर के हिन्दू नरेश मानसिंह को ही बनाया था, और तो क्या शाही(केन्द्रीय) सेनापति भी तो वही था।

इसी प्रकार से औरंगजेब तक ने अपने शासन–काल में काबुल का सूबेदार(राज्यपाल) बजाय किसी मुस्लिम अधिकारी के जोधपुर के राठौर राजा जसवन्त सिंह को ही बनाया था। जोकि धर्मभीरू होने के कारण ही सिंधु–सरिता के पार नहीं जाना चाहता था क्योंकि तब उसे धर्मभ्रष्ट होने का ही भयभाव सता रहा था। तभी एक कवि ने अटक में पहुँचाकर उन्हें यही कहा था– "आमै यामै अटक कहाँ"।

(छ) साम्प्रदायिकता के सर्प की फुफकार!

वर्तमान काल में भारत भर में फिर भी न जाने क्यों मत और पंथों से प्रेरित और पोषित राजनीति का बोलबाला आजकल बना हुआ है। कारण यह है कि जो शहरी सवर्ण पूँजीपति वर्ग कभी भारत के स्वर्ग–सिंहासन पर सत्तारोहण जनतांत्रिक व्यवस्था में नहीं कर सकता था, आजकल सम्प्रदायवाद रूपी शेषनाग के सहस्त्र फणों से विष विगरण करके वही अब इन्द्रप्रस्थ के इन्द्रासन पर नाग कुंडली मारकर बैठ गया है। उसी सवर्ण समाज ने राममंदिर निर्माण का अभियान आरम्भ करके बहुसंख्यक हिन्दू श्रमिक समाज को भी अपनी पूँछ के पीछे जोड लिया है। विशेषकर हमारा यही कृषक वर्ग जोकि अब आन्दोलित है, वह भी धार्मिक ध्रुवीकरण के आधार पर शहरी सवर्ण राजनीति के अंग–संग लग गया था। उसी के चलते तो किसानों और मजदूरों को सत्ता के स्वर्ग से नहुष की भाँति धकेलकर त्रिशंकु बनाकर अधबीच छोड दिया था।

आज जबकि ये तीन काले कानून उसकी मृत्यु के ही दस्तावेज बनकर जब उसके दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं, तभी उसे अपनी महाबीर हनुमान जैसी महाशक्ति का बोध हुआ है। तभी वह आज आकर दिल्ली के दरवाजे पर हुंकार भर रहा है। इससे पहले जब इस स्वदेशी या सांस्कृतिक अथवा साम्प्रदायिक सरकार ने नये नागरिक संशोधन कानून को लेकर अल्पसंख्यकों के विरुद्ध जमकर ही जनसंचार साधनों से विकराल विष–वमन ही किया था। आज भी सरकार के वही बंदी और भाट किसानों को भी विदेशी और देशद्रोही बता रहे हैं। लेकिन किसान केसरियों ने भी आज इन्द्रप्रस्थ का चारों ओर से घना घेराब ही कर डाला है। भले ही सरकार असंवदेनशील और अलोकतांत्रिक रूप से बहरी बनकर उनकी ब्रज हुंकार को अब तक अनसुनी ही करती रही है। लेकिन बकरे की माँ आखिर कब तक खैर मनायेगी। अन्त में अब जाकर ही तो कहीं ऊँट पहाड़ के नीचे आया है।

भले ही सैंकड़ों किसान सर्दी की ठंड से काल के कराल गाल में अकाल ही समा चुके हैं। उनमें से कुछ ने इन काले नियम–विधानों के विकट विरोध के चलते आत्मोत्सर्ग भी कर दिया है। लेकिन ये भूत–पिशाच या भैरव जैसे नंग–मलंग शंकरसुत के समान वीरभद्र के वीर वंशज(जाट) किसान–केहरी अब पीछे हटने वाले भी कहाँ हैं। आज सरदार अजीत सिंह का पगड़ी 'संभाल जट्टा' का निनाद निरन्तर गूँज उठा है, तो महाकवि दिनकर के शब्दों में हम अन्त में बस यही कहेंगें–

"जिसकी श्वांसों से महलों की नींव उखड़ जाती और ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह वक्त में ताब कहाँ, वह जिधर चाहती काल उधर ही मुडता है।"

(ज) विप्र बंधुओं का वर्ग–बोध विलुप्त क्यों हैं?

उत्तर भारत के सर्वाधिक जनाधार वाले कृषक–नायक श्री राकेश टिकैत ने जो सद्परामर्श विप्र–बन्धुओं को दिया है, उसे उन्हें सहज भाव से ही अब शिरोधार्य करना चाहिए। सर्वप्रथम तो उन्होंने केवल मंदिर के पण्डित या पुजारियों से ही किसान–आन्दोलन में उनका सक्रियतापूर्ण सहयोग मांगा है। जिस प्रकार कि सिख–संगतें भरपूर सेवा और सहकार कर रही है। फिर ब्राह्मण जाति का कठिनाई से एक यो दो प्रतिशत भाग ही आजकल पुजारी पेशे में सतत संलग्न है। अतएव वैसे भी शेष ब्राह्मणों की बहुसंख्या किसान या सेवक ही है। ऐसी स्थिति में उन्हें एक किसान–केसरी की सहयोग–याचना की अनसुनी या फिर उसकी कटु आलोचना नहीं करनी चाहिए। वरन् उनका जन और धन से सहर्ष सहयोग ही करना चाहिए। क्योंकि उनके लिए छेडे गये राममन्दिर, मुक्ति और निर्माण के आंदोलन में भी अन्य पिछड़े वर्ग की इन हमारी जाट–गूर्जर एवं आभीर एक लोधी–कुर्मी व माली–मराठा–मौर्य–कुशवाह जैसी मध्यकिसान जातियों ने अपना भरपूर योगदान उन्मुक्त भाव से दिया था।

आज जबकि वे सारे ही किसान श्रमिक अपने संवर्ग के हित–लाभों की रक्षा हेतु जब कृषक–केसरी संघर्ष सन्नद् हैं तो तब ब्राह्मण–पुरोहितों का भी यह कर्तव्य बनता है कि वह भी सिख संगतों की भाँति ही इस जनान्दोलन में अपना अमूल्य अवदान देकर उक्त आरोप से मुक्त हों। वरना उन पर परश्रमापहार का ही आरोप मढा ही जाएगा। क्योंकि मुस्लिम मौलानाओं तक ने अपनी–अपनी मस्जिदों के दुर्ग–द्वार इन धरती–पुत्रें की सहायता के लिये खोल दिए हैं। और तो क्या, बौद्ध भिक्षु तक बनारस और गया(बिहार) से आकर भी आज उनकी आवाज में अपनी आवाज मिला रहे हैं। ऐसी अनुकूल स्थिति में भला विप्र–बंधुओं का हाथ किसने बरजा हुआ है? उनके मंदिरों के ही कठोर कपाट अभी तक अन्नदाताओं के लिए फिर अनखुले क्यों हैं? इससे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि जैसे 'चोर की दाढी में ही तिनका' है। शेष अपुरोहित ब्राह्मण वर्ग को तो बल्कि श्री टिकैत साहब के कंठस्वर में ही अपना कंठस्वर मिलाकर कृषक पुत्रों के साथ समवेत स्वर में शंखनाद या जयनाद ही करना चाहिए। यदि आप इसके विपरीत विषैली प्रतिक्रिया ही व्यक्त करेंगें तो कल को पश्चिमोत्तरी भारत के ये कृषक–केहरी भी सिंध व पंजाब और कश्मीर के भी किसानों की ही भांति कहीं समतामूलक इस्लाम की शरण में भी जा सकते हैं। यदि वे वैसा प्रतिक्रिया–स्वरूप न भी करें तो भी सिखमत या गुरुमत एवं श्रमण–संस्कृति की समतामूलक सरस ध्वजा तो अब उन्हें आसानी से ही उपलब्ध हैं। इस प्रकार से आज ऊँट पहाड़ के ही नीचे है।

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और वर्ष 2021 में निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रेंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932 2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।